गावो ममाग्रतो नित्यं गावः पृष्ठत एव च ।
गावो मे सर्वतश्चैव गवां मध्ये वसाम्यहम् ।।
(महाभा० अनु० ८०.३)

गौएँ मेरे आगे रहें । गौएँ मेरे पीछे भी रहें । गौएँ मेरे चारों ओर रहें और मैं गौओं के मध्य में निवास करूँ ।

सान्निहोत्रो

गोदानविधिः

(वेदों में गोमहिमा)

जनक महाराज के द्वारा महर्षि याज्ञवल्क्य को गोदान

लेखक

उदयनाचार्य

साग्निहोत्रो

गोदानविधिः

(वेदों में गोमहिमा)

लेखक

उदयनाचार्य

संस्थापक, अध्यक्ष

निगम नीडम् - वेदगुरुकुलम्

(०९४४०७२१९५८)

प्रकाशक

वेदधर्म-प्रचार-समिति

निगम नीडम् - वेदगुरुकुलम्

महर्षि दयानन्द मार्ग

ग्रा० पिडिचेड, मं० गज्वेल

जि० मेदक (तेलंगाणा)५०२२७८

द्वितीय संस्करण

मार्गशीर्ष २०७२

दिसम्बर २०१४

मूल्य

50/-

साग्निहोत्रो **गोदानविधिः**

Sagnihotro Godanavidhi :

प्रतियाँ :1000

प्राप्ति स्थानः-

१. निगम-नीडम् (वेदगुरुकुलम्), महर्षि दयानन्द मार्ग , पिडिचेड, गज्वेल, मेदक - 502278

२. विजयकुमार गोविन्दाराम हासानन्द, 4408, नई सड़क दिल्ली - 110006

३. मुरली ब्रह्मचारी, आर्य निलयम्, 9-2-586, जूलम्मा मन्दिर के सामने, रेजिमेन्टल बाजार, सिकिन्द्राबाद - 25 (09441033702)

४. आर्य समाज, सीताफल मण्डी, सिकिन्द्राबाद - 500061

५. पतञ्जलि आयुर्वेद आरोग्य केन्द्रम्, श्रीराम कालनी, पुराना बान्सुवाडा रोड, बान्सुवाडा - 503187 (9494026684)

६. श्री गोपाल बुक हौज, 3-3-860, सुल्तान बाजार आर्य समाज के सामने, काचिगूड़ा, हैदराबाद -27 (040-24658101)

अक्षर संयोजक & मुखपृष्ठ का चित्रीकरण (डी.टी.पी.)

ब्रह्मचारी धर्मेन्द्र चैतन्य

निगम नीडम्-वेदगुरुकुलम्, पिडिचेड, गज्वेल

मुद्रण : गांधी प्रिंटिंग प्रेस, अदिलाबाद (तेलंगाणा), 5044001

प्रस्तावना

वैदिक संस्कृति कर्मकाण्डप्रधान संस्कृति है। जिसे वेद-मन्त्रों के विनियोग द्वारा एक धार्मिक व वैदिक रूप दिया जाता है, जिससे उसका महत्त्व बढ़ जाता है। परन्तु मध्यकाल में दुर्भाग्यवश वह वैदिक कर्मकाण्ड लुप्त होकर अवैदिक (पौराणिक) कर्मकाण्ड प्रचलित हो गया। जो कि आज भी विद्यमान है। सम्प्रति सम्पूर्ण कर्मकाण्ड प्रायः स्वकल्पित श्लोकों से ही सम्पन्न होता है। उदाहरणार्थ गोदानप्रयोगविधि के कुछ अंश दिखाते हैं- **''गवाम् अङ्गेषु तिष्ठन्ति भुवनानि चतुर्दश । यस्मात्तस्माच्छिवं मे स्यादिह लोके परत्र च ।। इति मन्त्रेण षोडशोपचारैः सवत्सां गां सम्पूज्य...।''** गोदान में विनियुक्त तथाकथित मन्त्रों (श्लोकों) को देखें- **''।।मन्त्राः।। यज्ञसाधनभूता या विश्वस्याघप्रणाशिनी। विश्वरूपधरो देवः प्रीयताम् अनया गवा ।। इति पठित्वा...''** (शुक्लयजुःशाखीय कर्मकाण्डप्रदीपः) ।

इस प्रकार के अवैदिक (पौराणिक) कर्मकाण्ड का खण्डन कर कर्मकाण्ड की वैदिकता और एकता के लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती ने संस्कारविधि एवं पञ्चमहायज्ञविधि पुस्तकें लिखी हैं। पुनरपि गौ के दानादान के लिए वैदिक गोदानविधि का अभाव है, जिससे अवैदिक गोदानविधि का निराकरण हो सके । अतः महर्षि की शैली में ही गोदानविधि प्रस्तुत की जा रही है ।

सन् २००६ में यह ग्रन्थ केवल मन्त्रों के विनियोग के साथ प्रकाशित हुआ था । इस संस्करण में विनियुक्त सभी मन्त्रों का अर्थ भी दिया गया है, जिससे मन्त्रार्थबोध के साथ-साथ वेदों में विद्यमान गोमहिमा, उनका गुणगान, उनसे प्राप्त होने वाले प्रयोजन और उनके प्रति मानवों का कर्त्तव्य क्या हैं? इत्यादि का भी बोध होगा । यह अर्थ ग्रन्थ के अन्त में पृष्ठक्रम से दिया गया है । आशा है गोभक्तजन-समुदाय इस ग्रन्थ से पूर्ण लाभ प्राप्त करेगा ।

कृतज्ञता - इस ग्रन्थ को आद्योपान्त पढ़कर अपनी-अपनी सम्मति तथा शुभकामनाओं को अभिव्यक्त किये सभी सम्मान्य विद्वानों को मैं हार्दिक धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ इस ग्रन्थ के सुन्दर एवं शुद्ध अक्षर-संयोजन और मुखपृष्ठ का आकर्षणीय चित्रीकरण (डी.टी.पी.) का कार्य ब्र० धर्मेन्द्र चैतन्य ने बड़े मनोयोग से किया है । अक्षर-शुद्धीकरण (प्रूफरीडिंग) का कार्य ब्र० सत्यश्रवा चैतन्य तथा ब्र० उषर्बुध चैतन्य ने सोत्साह सम्पन्न किया । ये मेरे अन्तेवासी इसीप्रकार वैदिक विद्या में प्रगति और विविध कलाओं में निपुणता को प्राप्त करते हुए निरन्तर उन्नति के पथ पर अग्रसर हों और भगवदनुग्रह प्राप्त करने के लिए सुपात्र बनें, यही मेरा आशीर्भाव है । इस ग्रन्थ के मुद्रण कार्य को सहर्ष स्वीकार कर श्रद्धा से इसे अत्यन्त सुन्दर मुद्रित करने के लिए श्री कट्ट दामोदर चारि जी को हार्दिक धन्यवाद ।

विदुषां वशंवदः

उदयनाचार्यः

ग्रन्थमुद्रण के सहयोगी दाता
का संक्षिप्त परिचय

चोयल गोत्रीय श्रीमती कंकुबाई जी और श्री केसाराम जी आर्य आप दोनों का एक आदर्श वैदिक परिवार है। राजस्थान के पाली जिला (मारवाड़ जंक्शन) के अन्तर्गत विद्यमान 'जाणुन्दा' ग्राम आपकी जन्मभूमि एवं कर्मभूमि रही है। आप बाल्यावस्था से ही साधु एवं सरल स्वभाव के रहें हैं। आप 16 वर्ष की अवस्था तक स्वग्राम में प्राईवेट शिक्षा के साथ-साथ कृषि (खेती) के काम भी सीखते हुए स्वावलम्बी बनने की ओर अग्रसर हुए। उसके पश्चात् 1949 से 1958 तक व्यापार का अनुभव प्राप्त करने के लिए नौकरी की और 1960 से 1965 तक पांच वर्ष जाणुन्दा ग्राम पंचायत के सरपंच रहकर जनता जनार्दन की निष्पक्षता से सेवा की। यह नेतृत्त्व कला आपको भगवान् से प्राप्त एक वरदान है। इसी कार्यकाल में सन् 1965 में आर्यसमाज के सम्पर्क में आये और स्वाभाविकतया आप धार्मिक, निर्मल तथा सत्य को पहचानने की क्षमतावाले होने के कारण आर्यसमाज के विचारों एवं वैदिक सिद्धान्तों से अत्यन्त प्रभावित हुए। तत्परिणामतः शीघ्र ही आप पूर्णरूप से वैदिक सिद्धान्ती और महर्षि दयानन्द के अनुयायी बने। आप अपने घर में प्रतिदिन नियमितरूप से संध्या, यज्ञ आदि का अनुष्ठान करते हुए वेदमन्त्रों का पाठ सभी को सुनाया करते थे। इसप्रकार आप अपनी ही धर्मोन्नति से सन्तुष्ट न रहकर अपने परिवार के जनों को एवं भाई-बन्धुओं को भी प्रभावित कर सभी को आर्यसमाजी बनाया। अब वे भी आपके ही समान नशामुक्त एवं शुद्ध-शाकाहारी हैं। सन् 1965 से 1995 तक जाणुन्दा ग्राम के पोस्ट आफिस का कार्य किया। सन् 1980 से सन् 2005 तक सीरवी समाज, जाणुन्दा

के कोषाध्यक्ष पद पर रहकर 25 वर्ष निःशुल्क सेवा कार्य किया। इतना ही नहीं आप एक परम गोभक्त भी हैं । 16.08.1999 को **''श्रीजगदम्बा गोशाला-जाणुन्दा''** के नाम से गोशाला की स्थापना कर आज तक कोषाध्यक्ष के रूप में आप अपनी सेवा प्रदान कर रहें हैं । आप आर्यसमाज के बड़े-बड़े उत्सवों में सोत्साह भाग लेते हैं । विशेषकर ऋषि उद्यान-अजमेर के ऋषिमेलाओं पर प्रतिवर्ष आप उपस्थित रहते हैं । आप एक उदारवान् दानी भी हैं । आर्यसमाज के कार्यक्रमों, गोशालाओं एवं गुरुकुलों को आप मुक्तहस्त से दान प्रदान करते हैं ।

आपको एक पुत्र एवं पांच पुत्रियाँ हैं । उनका परिचय इसप्रकार है -

१. पुत्री-श्रीमती पोनी - श्री बेनाराम जी सिंदरा, मुम्बई ।
२. पुत्र-श्री मूलाराम - श्रीमती रेखा चोयल, हैदराबाद ।
३. पुत्री-श्रीमती प्यारी - श्री नेमाराम जी गेहलोत, हैदराबाद ।
४. पुत्री-श्रीमती संगीता - श्री गुणेशराम जी काग, हैदराबाद ।
५. पुत्री-श्रीमती ललिता - श्री जसाराम जी वर्पा (C.A.), हैदराबाद।
६. पुत्री-श्रीमती अनिता - श्री रमेश कुमार जी काग, सूरत ।

श्रीमान् मूलाराम जी चौधरी का जन्म 19.09.1961 में हुआ था। पिता जी के आर्यसमाजी होने के कारण आपको जन्म से ही वैदिक संस्कार एवं विचार प्राप्त हुए । आपने पिताजी के संरक्षण में (1983) B.Com तक अध्ययन किया । साथ में आर्यसमाज के कार्यक्रमों, उत्सवों में भाग लेते रहें हैं और बहुत से गणमान्य विद्वानों के सम्पर्क में रहते हैं। सन् 1980 में कुछ मास तक चित्तौड़गढ गुरुकुल में वहाँ के नियमों का पालन करते हुए अध्ययन किया । दो वर्ष तक ईरोड़ (चेन्नाई) व मुम्बई में व्यवसाय का अनुभव प्राप्त करके 31–3–1985 को शापुरनगर (हैदराबाद) एरिए में

किसान एन्टरप्राइजेज (इलेक्ट्रीक व हार्डवेयर) नाम से स्वयं का व्यवसाय प्रारम्भ किया । 1985 से अपने चचेरे भाई श्री चन्द्रगुप्त जी सुपुत्र श्री स्वरूपरामजी चौधरी के साथ साझेदारी (पर्टनरशिप) में व्यवसाय चला रहे हैं । सन् 07.05.1989 में आपका विवाह श्रीमती रेखा चौधरी (M.A.,Bed) सुपुत्री श्री जोराराम जी परिहार, ग्राम आउवा के साथ हुआ ।

आपको दो पुत्र एवं तीन पुत्रियाँ हैं । इनके नाम इसप्रकार हैं–

१. पुत्र - श्री मुकेश कुमार, पुत्रवधु - श्रीमती प्रमिला चौधरी पौत्र - श्री आयुष २. पुत्री - कीर्त्ति चौधरी (M.A.) । ३. पुत्री - माधवी चौधरी । ४. पुत्री - देविता चौधरी । ५. पुत्र - श्री गनवर्य चौधरी।

श्री मूलाराम जी चौधरी अपने पिताश्री के समान ही दानशील, सौम्य एवं महर्षि दयानन्द के अनुयायी हैं । आप भी गुरुकुल, गोशाला, आर्यसमाज व उनके कार्यक्रम, यज्ञ आदि के लिए सहर्ष मुक्तहस्त से दान देते हैं । आप पतञ्जलि योगपीठ-हरिद्वार के आजीवन सदस्य हैं और उस संस्था के साथ पूर्णरूप से सम्बद्ध भी हैं । आपकी पुत्री कीर्ति पतंजलि विश्वविद्यालय में अध्ययनरत है । अब आप निगम-नीडम् (वेदगुरुकुल) के भी न्यासी (ट्रस्ट के सदस्य) हैं । सीरवी समाज-हैदराबाद (तेलंगाणा) का तीन वर्ष तक कोषाध्यक्ष रहकर उस समाज की सेवा की । आप व्यापार का कार्य बड़ी दक्षता के साथ करते हुए अपने घर में साप्ताहिक यज्ञ परिवार के साथ कर अपने बच्चों को वैदिक संस्कार प्रदान करते हैं । पूरा परिवार शुद्ध शाकाहारी एवं नशामुक्त है । इस प्रकार आपका पूरा परिवार एक आदर्श वैदिक परिवार है ।

आपकी माताश्री कंकुबाई (जन्म-1933) का गतवर्ष 29 अगस्त-2013 को शापुरनगर (हैदराबाद) में स्वर्गवास हुआ था । उनकी अन्त्येष्टि आपने पूर्ण वैदिक पद्धति से कराया । उन्हें स्वर्गवास होकर एक वर्ष व्यतीत हुआ । इस अवसर पर आप निगमनीडम् गुरुकुल में यज्ञ एवं सत्संग का

आयोजन कर सभी के लिए भोजन की व्यवस्था भी किया, साथ में माताजी के संस्मरण में गुरुकुल को सहयोग प्रदान कर **''साग्निहोत्र-गोदानविधि''** पुस्तक को प्रकाशित करने का संकल्प किया है। आपके इसी संकल्प के परिणामस्वरूप हम पाठकों के समक्ष इस वैदिक ग्रन्थ को प्रस्तुत कर रहें हैं।

परमपिता परमात्मा से सम्पूर्ण गुरुकुल का परिवार प्रार्थना करता है कि दिवंगत माताजी को आत्मिक सुख-शान्ति प्रदान करें और पूरे परिवार को स्वास्थ्य, आनन्द एवं दीर्घायु प्रदान करें।

स्थायी पता

मूलाराम (भगाराम) चौधरी
किसान एन्टरप्राइजेज
प्लाट नं. 8, H.No. 32-213/1
Opp- रंगा टाकीज मैन रोड़
शापुरनगर हैदराबाद (तेलंगाना)
Pin-500055

वेदानुयायी
उदयनाचार्य

विषयसूची

सम्मतियाँ

१

वेद, उपनिषद् और स्मृति ग्रन्थों में गौ की अत्यन्त महिमा बतलायी गयी है । गौ और ब्राह्मण का सम्बन्ध अन्योन्याश्रित है । ब्रह्म अर्थात् ज्ञान या विद्या और जो उसको जानता है, उसे ब्राह्मण कहते हैं। विद्या में ही ब्राह्मण की पहचान है, उसका महत्त्व है - **'विद्यात् ब्राह्मणं महत्'**(अथर्व० १०.८.३७)। ब्राह्मण को जो दक्षिणा दी जाती है, उसमें गोदान सर्वोत्तम है । इस दान का वह यथोचित लाभ उठाता है और उस 'अघ्न्या' की समुचित रक्षा करता है । वह उसकी उपयोगिता जानता है और उसे मातृवत् पालन करता है । **'पशून् पाहि'** इस वेदाज्ञा का भी पालन करता है ।

कठोपनिषत् में वर्णन है कि वाजश्रवा ने यज्ञफल की कामना से ब्राह्मणों को दक्षिणा में गौओं को दान में दे दिया । वे गौएँ कमजोर और जननशक्ति विहीन थीं । ऐसी गौओं को दान देनेवाला आनन्दरहित लोकों में जाता है (कठोप०१.१.१-३) ।

मनुस्मृति में गोदान-विषयक निर्देश द्रष्टव्य हैं। कुल्लूकभट्ट की व्याख्या में कहा गया है- **''यस्य ब्रह्मचारिणो यानि चर्मसूत्रमेखलादण्डवस्त्राण्युपनयन-काले गृहेण विहितानि, गोदानादिव्रतेष्वपि तान्येव नवानि कर्तव्यानि।''** (मनु०२.१७५)। कात्यायन के अनुसार १६ प्रधान ऋत्विजों को बारह-बारह गौएँ दक्षिणा में दान देना चाहिए । यथा- **'कात्यायनेन ''यद्वा द्वादशाद्येभ्यः'' इति प्रत्येकं द्वादशगोदानं विहितम् ।** (मनु० ८.२१०) ।

आदि मानवधर्मशास्त्र मनुस्मृति में स्पष्टतः ब्राह्मण को गोदान देने और गौओं को घास (चारा) देने का स्पष्टतः निर्देश है । यथा-

सत्यमुक्त्वा तु विप्रेषु विकिरेद्यवसं गवाम् ।
गोभिः प्रवर्तिते तीर्थे कुर्युस्तस्य परिग्रहम् ।। (मनु० ११.१९६)

सद्ब्राह्मण को गोदान और गौओं को घास आदि चारा खिलाना पुण्य का काम है । इस गोदानविधि को विद्वद्वर श्री उदयनाचार्य ने 'गोदानविधिः'

नामक पुस्तिका में वेदमन्त्रों का विनियोग करते हुए सम्यक्तया दर्शाया है। यह उनकी गौ के प्रति निष्ठा और वेदों के प्रति आस्था का प्रतीक है ।

आशा है पुरोहितगण इस कृति से लाभ उठाते हुए लेखक के परिश्रम को सार्थक बनाएंगे और गौ के प्रति वेदानुमोदित कर्तव्य का पालन करेंगे ।

डॉ० विजयवीर विद्यालंकार
पूर्व अधिष्ठाता-प्राच्य भाषा संकाय
उस्मानिया विश्वविद्यालय,हैदराबाद

२

मान्यवर आचार्य जी

सादरं नमस्तेऽस्तु। अत्र कुशलं तत्रास्तु ।

आप द्वारा प्रेषित लघुपुस्तिका 'गोदानविधिः' प्राप्त हुई। तदर्थ बहुत धन्यवाद । मैंने सारी पुस्तक पढ़ी । अतीव हर्ष हुआ कि आपने चारों वेदसंहिताओं से गोसम्बन्धी मंत्रों का चयन करके उनका विनियोग इदं प्रथमतया इस छोटी सी पुस्तक में कर गोदान चिकीर्षुः गोभक्त /यजमानों के कल्याण के लिए निर्मित कर महान् कल्याण और उपकार किया है । एतदर्थ आप साधुवादार्ह हैं। इसप्रकार की यह पुस्तक महर्षि दयानन्द की गोकरुणानिधि के पश्चात् संस्कृत भाषा में अतीव रोचक और प्रामाणिक रूप से आपने सम्पादित की है। इस में गोमाहात्म्यप्रदर्शक वैदिक सूक्तियाँ और राष्ट्रकवि मैथिली शरण गुप्त आदि की सुन्दर काव्य रत्नावली एवं भजनादि संगृहीत कर पुस्तक में चार चाँद लगा दिये हैं ।

यद्यपि यह पुस्तक धार्मिक कर्मकाण्ड से सम्बन्धित है, तथापि इससे गोभक्ति व गो-महत्त्व का प्रचार-प्रसार तो होगा ही। अतः आपसे अनुरोध है कि इसे देशभर में अधिकाधिक प्रचारित करने का प्रयत्न किया जाय। पुनः

आपके श्रम के लिए भूरिशः धन्यवाद और साधुवाद है......

डॉ० जयदेव उप्रेती
पूर्व अध्यक्ष-संस्कृत विभाग-कुमाउ यूनिवर्सिटि
अल्मोडा, उत्तराञ्चल

३

गावो भगः

गावः प्रतिष्ठा भूतानां तथा गावः परायणम् ।
गावः पुण्याः पवित्राश्च गोधनं पावनं तथा ।।

आप द्वारा प्रेषित 'गोदानविधिः' पुस्तिका प्राप्त हुई ।पुस्तिका पर मेरी सम्मति एवं भाव व्यक्त कर रही हूँ ।

अवैदिक, विकृत, पौराणिक कर्मकाण्ड से समन्वित गोदान प्रक्रिया के आडम्बर निवारण के लिए 'गोदानविधि' पुस्तिका के माध्यम से आपने जो गोदानविधि का प्रारूप प्रस्तुत किया है वह वैदिकविधि से परिपूर्ण, आडम्बररहित उत्तम विधान है। एतदर्थ बहुशः धन्यवाद ।

कर्मकाण्ड विधियाँ आज मनुष्य के लिए चुनौति स्वरूप हैं ,उस चुनौति में वैदिकविधि प्रस्तुत करना कठिन न हो, पुनरपि श्रमसाध्य अवश्य है। आपने पाखण्डमण्डित गोदानविधि के विकल्प में वेदमन्त्रयुक्तविधि देकर गोदानविधि का परिष्कार किया है। यह परिष्कार पाखण्ड को दूर करने में समर्थ अवश्य होगा, ऐसी पूर्ण आशा है ।

पौराणिक प्रक्रिया को अधःसात करने के लिये आप द्वारा निबद्ध वैदिक प्रक्रिया सबके लिए उपादेय है । प्रक्रिया संकलन के लिए पुनः साधुवचांसि।

आचार्या सूर्यादेवी चतुर्वेदा
पाणिनि कन्यामहाविद्यालय, वाराणसी

गोदान-विधिः

ब्राह्मणेभ्यो=विद्वद्भ्यो गोदाने प्रमाणानि -

ब्राह्मणों अर्थात् विद्वानों को गोदान करने में प्रमाण -

दक्षिणाश्वं दक्षिणा गां ददाति दक्षिणा चन्द्रमुत यद्धिरण्यम् ।
दक्षिणान्नं वनुते यो न आत्मा दक्षिणां वर्म कृणुते विजानन् ।।

(ऋ० १०.१०७.७)

ददामीत्येव ब्रूयादनु चैनामभुत्सत ।
वशां ब्रह्मभ्यो याचद्भ्यस्तत्प्रजावदपत्यवत् ।।१।।
जायमानाभि जायते देवान्त्सब्राह्मणान्वशा ।
तस्मात् ब्रह्मभ्यो देयैषा तदाहुः स्वस्य गोपनम् ।।१०।।
प्रियं पशूनां भवति यद् ब्रह्मभ्यः प्रदीयते ।
अथो वशायास्तत्प्रियं यद्देवत्रा हविः स्यात् ।।४०।।
त्रीणि वै वशाजातानि विलिप्ती सूतवशा वशा
ताः प्र यच्छेद् ब्रह्मभ्यः सोऽनाव्रस्कः प्रजापतौ ।।४७।।

(अथर्व० १२.४)

गोदानस्य प्रयोजनानि
गोदान के प्रयोजन

स स्वर्गमा रोहति यत्रादस्त्रिदिवं दिवः ।
अपूपनाभिं कृत्वा यो ददाति शतौदनाम् ॥ ५॥
स तांल्लोकान्त्समाप्नोति ये दिव्या ये च पार्थिवाः ।
हिरण्यज्योतिषं कृत्वा यो ददाति शतौदनाम् ॥६॥
अन्तरिक्षं दिवं भूमिमादित्यान्मरुतो दिशः ।
लोकान्त्स सर्वानाप्नोति यो ददाति शतौदनाम् ॥१०॥

(अथर्व०१०.९)

य एवं विदुषे वशां ददुस्ते गतास्त्रिदिवं दिवः ॥
ब्राह्मणेभ्यो वशां दत्वा सर्वाँल्लोकान्त्समश्नुते ।

(अथर्व० १०.१०.३२,३३)

प्रदीयमाना गौरङ्गभङ्गा न भवेत् । अन्यथा अनिष्ट-फलानि प्राप्नुवन्ति । तत्र प्रमाणम्-

दी जानी वाली गौ अङ्गभङ्गा न हो, अन्यथा अनिष्ट फल प्राप्त होंगे । इसमें यह प्रमाण है-

कूटयास्य सं शीर्यन्ते श्लोणया काटमर्दति ।
बण्डया दह्यन्ते गृहाः काणया दीयते स्वम् ॥

(अथर्व०१२.४.३)

अथ विधिः

गोदानार्थम् आनीयमानां गां दृष्ट्वा ग्रहीता इमौ मन्त्रौ पठेत् -

गोदान के लिये लाई जाती हुई गौ को देखकर ग्रहीता इन दो मन्त्रों को पढ़ें-

ओं एह यन्तु पशवो ये परेयुर्वायुर्येषां सहचारं जुजोष ।
त्वष्टा येषां रूपधेयानि वेदास्मिन्तान्गोष्ठे सविता नि यच्छतु ॥१॥
इमं गोष्ठं पशवः सं स्रवन्तु बृहस्पतिरा नयतु प्रजानन्।
सिनीवाली नयत्वाग्रमेषामाजग्मुषो अनुमते नि यच्छ ॥२॥

(अथर्व० २.२६)

समीपे आगतायां गवि ग्रहीता इमौ मन्त्रौ पठेत्-

गाय के समीप आने पर ग्रहीता इन दो मन्त्रों को पढ़ें-

ओं हिङ्कृण्वती वसुपत्नी वसूनां
वत्समिच्छन्ती मनसाभ्यागात् ।

दुहामश्विभ्यां पयो अघ्न्येयं

सा वर्धतां महते सौभगाय ॥ (ऋ० १.१६४.२७)

आ गावो अग्मन्नुत भद्रमक्रन्-

त्सीदन्तु गोष्ठे रणयन्त्वस्मे ।

प्रजावतीः पुरुरूपा इह स्यु-

रिन्द्राय पूर्वीरुषसो दुहानाः ॥ (ऋ० ६.२८.१)

अनन्तरं गोः स्वामी (दाता) पवित्राङ्गुलिर्भूत्वाञ्जलौ किञ्चिज्जलं गृहीत्वा देशकालोत्कीर्तनान्ते गोत्रादिकं निर्दिश्य ''मम निखिलदुरितदौर्भाग्यदुःखनिरसनपूर्वकायु-रारोग्यधनधान्यद्विपदचतुष्पदशान्तिपूर्वकं स्वर्गलोक-प्राप्तिकामः श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं यथोपलब्धद्रव्यैस्सह गोप्रदानमहं करिष्ये(तदङ्गाग्निहोत्रं च करिष्ये)'' इति संकल्प्य तृणजले निरस्य पुनः दर्भं जलञ्चादायानेन मन्त्रेण गवि दर्भैरपः सिञ्चेद् -

इसके बाद गाय का स्वामी अर्थात् गोदाता पवित्राङ्गुलि होकर हाथ में थोड़ा पानी लेकर देश, काल और गोत्रादि का कथन कर **'मम निखिलदुरित......करिष्ये'** ऐसा संकल्प करके तृणों से निर्मित पवित्र को और पानी को नीचे छोड़कर पुनः दर्भ एवं जल लेकर निम्न मन्त्र से गाय के ऊपर दर्भों से जल का सिञ्चन करें -

ओं **सदा गावः शुचयो विश्वधायसः सदा देवा अरेपसः ॥**

(साम० ४४२)

ततोऽनेन मन्त्रेण गां नमस्कुर्यात् तृणधान्यादिकञ्चादयेत्-

तदन्तर इस मन्त्र से गाय को नमन करें और हरा घास, गुड़, दाना आदि खिलावें-

ओं नमस्ते जायमानायै जाताया उत ते नमः ।

बालेभ्यः शफेभ्यो रूपायाघ्न्ये ते नमः ॥

(अथर्व० १०.१०.१)

ततोऽधस्तनैर्मन्त्रैर्गां स्तुयातान्दाताग्रहीतारौ -

उसके पश्चात् दाता और ग्रहीता दोनों ही निम्न लिखित मन्त्रों से गौ की स्तुति करें -

ओं प्रजापतिश्च परमेष्ठी च शृङ्गे इन्द्रः

शिरो अग्निर्ललाटं यमः कृकाटम् ॥१॥

सोमो राजा मस्तिष्को द्यौरुत्तरहनुः पृथिव्यधरहनुः॥२॥

विद्युज्जिह्वा मरुतो दन्ता रेवतीर्ग्रीवाः

कृत्तिका स्कन्धा घर्मो वहः ॥३॥

विश्वं वायुः स्वर्गो लोकः कृष्णद्रं विधरणी निवेष्यः॥४॥

श्येनः क्रोडो३न्तरिक्षं पाजस्यं१

बृहस्पतिः ककुद्बृहतीः कीकसाः ॥५॥

देवानां पत्नीः पृष्टय उपसदः पर्शवः ॥६॥

मित्रश्च वरुणश्चांसौ त्वष्टा

चार्यमा च दोषणी महादेवो बाहू ॥७॥

इन्द्राणी भसद्वायुः पुच्छं पवमानो बालाः ॥८॥

ब्रह्म च क्षत्रं च श्रोणी बलमूरू ॥९॥

धाता च सविता चाष्ठीवन्तौ जङ्घा

गन्धर्वा अप्सरसः कुष्ठिका अदितिः शफाः ॥१०॥

चेतो हृदयं यकृन्मेधा व्रतं पुरीतत् ॥११॥

क्षुत्कुक्षिरिरा वनिष्ठुः पर्वताः प्लाशयः ॥१२॥

क्रोधो वृक्कौ मन्युराण्डौ प्रजा शेपः ॥१३॥

नदी सूत्री वर्षस्य पतय स्तना स्तनयित्नुरूधः ॥१४॥

विश्वव्यचाश्चर्मौषधयो लोमानि नक्षत्राणि रूपम् ॥१५॥

देवजना गुदा मनुष्या आन्त्राण्यत्रा उदरम् ॥१६॥

रक्षांसि लोहितमितरजना ऊबध्यम् ॥१७॥

अभ्रं पीबो मज्जा निधनम् ॥१८॥

अग्निरासीन उत्थितोऽश्विना ॥१९॥

इन्द्रः प्राङ् तिष्ठन्दक्षिणा तिष्ठन्यमः ॥२०॥

प्रत्यङ् तिष्ठन्धातोदङ् तिष्ठन्त्सविता ॥२१॥

तृणानि प्राप्तः सोमो राजा ॥२२॥

मित्र ईक्षमाण आवृत्त आनन्दः ॥२३॥

युज्यमानो वैश्वदेवो युक्तः प्रजापतिर्विमुक्तः सर्वम् ॥२४॥

एतद्वै विश्वरूपं सर्वरूपं गोरूपम् ॥२५॥

उपैनं विश्वरूपाः सर्वरूपाः पशवस्तिष्ठन्ति य एवं वेद ॥२६॥ (अथर्व० ९.७.१-२६)

माता रुद्राणां दुहिता वसूनां स्वसादित्यानाममृतस्य नाभिः।
प्र नु वोचं चिकितुषे जनाय मा गामनागामदितिं वधिष्ट॥
(ऋ० ८.१०१.१५)

किं स्वित्सूर्यसमं ज्योतिः किं समुद्रसमं सरः ।
किं स्वित्पृथिव्यै वर्षीयः कस्य मात्रा न विद्यते ॥
ब्रह्म सूर्यसमं ज्योतिर्द्यौः समुद्रसमं सरः ।
इन्द्रः पृथिव्यै वर्षीयान् गोस्तु मात्रा न विद्यते ॥
(यजुः० २३.४७,४८)

एवं स्तुत्वा दाता गोः रशनामादाय हिरण्येन तृण-शकलैर्वा सह गां ग्राहयन् इमान् मन्त्रान् ब्रूयात् -

इस प्रकार गाय की स्तुति कर दाता गाय की रस्सी को हिरण्य (सोने) अथवा दर्भ के साथ पकड़ाते हुए इन मन्त्रों को बोलें-

ओं यो वै कशायाः सप्त मधूनि वेद मधुमान् भवति ।

ब्राह्मणश्च राजा च धेनुश्चानड्वांश्च

व्रीहिश्च यवश्च मधु सप्तमम् ॥ (अथर्व० ९.१.२२)

यूयं गावो मेदयथा कृशं चिदश्रीरं चित् कृणुथा सुप्रतीकम्।

भद्रं गृहं कृणुथ भद्रवाचो बृहद् वो वय उच्यते सभासु ॥

(ऋ० ६.२८.६)

ये देवा दिविषदो अन्तरिक्षसदश्च ये ये चेमे भूम्यामधि ।

तेभ्यस्त्वं धुक्ष्व सर्वदा क्षीरं सर्पिरथो मधु ॥

(अथर्व० १०.९.१२)

सं वो गोष्ठेन सुषदा सं रय्या सं सुभूत्या ।

अहर्जातस्य यन्नाम तेना वः सं सृजामसि ॥(अथर्व० ३.१४.१)

उप ह्वये सुदुघां धेनुमेतां सुहस्तो गोधुगुत दोहदेनाम् ।

श्रेष्ठं सवं सविता साविषन्नोऽभीद्धो घर्मस्तदु षु प्र वोचम् ॥

(ऋ० १.१६४.२६)

अपो देवीर्मधुमतीर्घृतश्चुतो ब्रह्मणां हस्तेषु प्रपृथक्सादयामि।

यत्काम इदमभिषिञ्चामि वोऽहं तन्मे सर्वं सं पद्यतां

वयं स्याम पतयो रयीणाम् ॥ (अथर्व० १०.९.२७)

इमान् मन्त्रान् पठित्वा- " इमां गां सकलदिव्यगुणां दोग्ध्रीं सवत्सामव्यङ्गां सर्वाभरणभूषितां कृतसंकल्प- सिध्यर्थं श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं तुभ्यमहं सम्प्रददे"इत्युक्त्वा ग्राहयेत् गाम्।

इन मन्त्रों को बोलकर "**इमां गां....**" को कहकर गाय को दे देवें ।

गां गृह्णन् आदाता इमान् मन्त्रान् वदेत् -

गाय का ग्रहण करते हुये आदाता इन मन्त्रों को बोलें -

ओं गावो भगो गाव इन्द्रो मे अच्छान्

गावः सोमस्य प्रथमस्य भक्षः।

इमा या गावः स जनास इन्द्र

इच्छामीद्धृदा मनसा चिदिन्द्रम् ॥ (ऋ०६.२८.५)

गावस्सन्तु प्रजास्सन्त्वथो अस्तु तनूबलम् ।

तत् सर्वमनु मन्यन्तां देवा ऋषभदायिने ॥(अथर्व० ९.४.२०)

संजग्माना अबिभ्युषीरस्मिन् गोष्ठे करीषिणीः ।
बिभ्रतीः सोम्यं मध्वनमीवा उपेतन ॥
इहैव गाव एतनेहो शकेव पुष्यत ।
इहैवोत प्र जायध्वं मयि संज्ञानमस्तु वः ॥
शिवो वो गोष्ठो भवतु शारिशाकेव पुष्यत ।
इहैवोत प्र जायध्वं मया वः सं सृजामसि ॥
मया गावो गोपतिना सचध्वमयं वो गोष्ठ इह पोषयिष्णुः।
रायस्पोषेण बहुला भवन्तीर्जीवा जीवन्तीरुप वः सदेम ॥

(अथर्व०३.१४.३-६)

सूयवसाद्भगवती हि भूया अथो वयं भगवन्तः स्याम ।
अद्धि तृणमघ्न्ये विश्वदानीं पिब शुद्धमुदकमाचरन्ती ॥

(ऋ०१.१६४.४०)

एतैर्मन्त्रैः गामागृह्य अधस्तनैर्मन्त्रैः दातुर्मनः कामना-सिद्धिमभिलषेत् –

इन मन्त्रों से गाय का ग्रहण कर निम्न लिखित मन्त्रों से दाता की मनःकामनासिद्धि के लिये ईश्वर से प्रार्थना करें -

ओं इषे त्वोर्जे त्वा वायव स्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु
श्रेष्ठतमाय कर्मणऽ आप्यायध्वमघ्न्याऽ इन्द्राय भागं
प्रजावतीरनमीवाऽ अयक्ष्मा मा व स्तेनऽ ईशत माघशंसो
ध्रुवा अस्मिन् गोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून् पाहि॥

८

(यजु॰१.१)

यत्ते शिरो यत्ते मुखं यौ कर्णौ ये च ते हनू।
आमिक्षां दुह्रतां दात्रे क्षीरं सर्पिरथो मधु ॥
यौ त ओष्ठौ ये नासिके ये श्रृङ्गे ये च तेऽक्षिणी।
आमिक्षां दुह्रतां दात्रे क्षीरं सर्पिरथो मधु ॥
यत्ते क्लोमा यद्धृदयं पुरीतसहकण्ठिका।
आमिक्षां दुह्रतां दात्रे क्षीरं सर्पिरथो मधु ॥
यत्ते यकृद्ये मतस्ने यदान्त्रं याश्च ते गुदाः।
आमिक्षां दुह्रतां दात्रे क्षीरं सर्पिरथो मधु ॥
यस्ते प्लाशिर्यो वनिष्ठुर्यौ कुक्षी यच्च चर्म ते।
आमिक्षां दुह्रतां दात्रे क्षीरं सर्पिरथो मधु ॥
यत्ते मज्जा यदस्थि यन्मांसं यच्च लोहितम्।

आमिक्षां दुह्रतां दात्रे क्षीरं सर्पिरथो मधु ॥
यौ ते बाहू ये दोषणी यावंसौ या च ते ककुत् ।
आमिक्षां दुह्रतां दात्रे क्षीरं सर्पिरथो मधु ॥
यास्ते ग्रीवा ये स्कन्धा याः पृष्टीर्याश्च पर्शवः ।
आमिक्षां दुह्रतां दात्रे क्षीरं सर्पिरथो मधु ॥
यौ त ऊरू अष्ठीवन्तौ ये श्रोणी या च ते भसत् ।
आमिक्षां दुह्रतां दात्रे क्षीरं सर्पिरथो मधु ॥
यत्ते पुच्छं ये ते बाला यदूधो ये च ते स्तनाः ।
आमिक्षां दुह्रतां दात्रे क्षीरं सर्पिरथो मधु ॥
यास्ते जङ्घा याः कुष्ठिका ऋच्छरा ये च ते शफाः ।
आमिक्षां दुह्रतां दात्रे क्षीरं सर्पिरथो मधु ॥
यत्ते चर्म शतौदने यानि लोमान्यघ्न्ये ।
आमिक्षां दुह्रतां दात्रे क्षीरं सर्पिरथो मधु ॥

(अथर्व० १०.९.१३-२४)

॥ इति गोदानविधिः ॥

अथाग्निहोत्रम्

अस्मिन्नवसरे यष्टुकामा दैनिकाग्निहोत्रं हुत्वा अधोलिखितैर्मन्त्रैर्जुहुयुः -

इस अवसर पर यज्ञ करना चाहें तो दैनिक अग्निहोत्र कर निम्नलिखित विशेष मन्त्रों से आहुतियाँ देवें -

ओं ता वां वास्तून्युश्मसि गमध्यै यत्र गावो भूरिशृङ्गा अयासः।
अत्राह तदुरुगायस्य वृष्णः परमं पदमव भाति भूरि ॥
(ऋ॰१.१५४.६)

य ईशे पशुपतिः पशूनां चतुष्पदामुत यो द्विपदाम् ।
निष्क्रीतः स यज्ञियं भागमेतु रायस्पोषा यजमानं
सचन्ताम् ॥ (अथर्व॰ २.३४.१)

सं सं स्रवन्तु पशवः समश्वाः समु पूरुषाः ।
सं धान्यस्य या स्फातिः संस्राव्येण हविषा जुहोमि॥
सं सिञ्चामि गवां क्षीरं समाज्येन बलं रसम् ।
संसिक्ता अस्माकं वीरा ध्रुवा गावो मयि गोपतौ ॥

(अथर्व॰ २.२६.३,४)

मातादित्यानां दुहिता वसूनां प्राणः प्रजानाममृतस्य नाभिः।
हिरण्यवर्णा मधुकशा घृताची महान्भर्गश्चरति मर्त्येषु।।

(अथर्व०९.१.४)

ब्रह्म सूर्यसमं ज्योतिर्द्यौः समुद्रसमं सरः ।
इन्द्रः पृथिव्यै वर्षीयान् गोस्तु मात्रा न विद्यते ।।

(यजु०२३.४८)

गोभिष्टरेमामतिं दुरेवां यवेन वा क्षुधं पुरूहूत विश्वे ।
वयं राजसु प्रथमा धनान्यरिष्टासो वृजनीभिर्जयेम ।।
कृतं मे दक्षिणे हस्ते जयो मे सव्य आहितः ।
गोजिद् भूयासमश्वजिद् धनञ्जयो हिरण्यजित् ।।

(अथर्व०७.५०.७,८)

सूयवसाद् भगवती हि भूया अथो वयं भगवन्तः स्याम।
अद्धि तृणमघ्न्ये विश्वदानीं पिब शुद्धमुदकमाचरन्ती ।।

(ऋ० १.१६४.४०)

न ता नशन्ति न दभाति तस्करो
नासामामित्रो व्यथिरा दधर्षति ।

देवाँश्च याभिर्यजते ददाति च
ज्योगित् ताभिः सचते गोपतिः सह ॥
न ता अर्वा रेणुककाटो अश्नुते
न संस्कृतत्रमुप यन्ति ता अभि ।
ऊरुगायमभयं तस्य ता अनु गावो
मर्तस्य वि चरन्ति यज्वनः ॥ (ऋ०६.२८.३,४)
कः पृश्निं धेनुं वरुणेन दत्तामथर्वणे सुदुघां नित्यवत्साम्।
बृहस्पतिना सख्यं जुषाणो यथावशं तन्वः कल्पयाति ॥
(अथर्व०७.१०४.१)
बालास्ते प्रोक्षणीः सन्तु जिह्वा सं माष्ट्र्वघ्न्ये ।
शुद्धा त्वं यज्ञिया भूत्वा दिवं प्रेहि शतौदने ॥
घृतं प्रोक्षन्ती सुभगा देवी देवान् गमिष्यति ।
पक्तारमघ्न्ये मा हिंसीर्दिवं प्रेहि शतौदने ॥
अपो देवीर्मधुमतीर्घृतश्चुतो ब्रह्मणां
हस्तेषु प्रपृथक्सादयामि ।
यत्काम इदमभिषिञ्चामि वोऽहं तन्मे सर्वं सं पद्यतां

वयं स्याम पतयो रयीणाम् ॥ (अथर्व०१०.९.३,११,२७)

जनं बिभ्रती बहुधा विवाचसं
नानाधर्माणं पृथिवी यथौकसम् ।
सहस्रं धारा द्रविणस्य मे दुहां
ध्रुवेव धेनुरनपस्फुरन्ती ॥ (अथर्व०१२.१.४५)

पयो धेनूनां रसमोषधीनां जवमर्वतां कवयो य इन्वथ ।
शग्मा भवन्तु मरुतो नः स्योनास्ते नो मुञ्चन्त्वंहसः ॥
(अथर्व० ४.२७.३)

यो वै कशायाः सप्त मधूनि वेद मधुमान्भवति ।
ब्राह्मणश्च राजा च धेनुश्चानड्वांश्च व्रीहिश्च यवश्च
मधु सप्तमम् ॥ (अथर्व० ९.१.२२)

त्र्यङ्गाकाशकराब्दे हि ज्येष्ठमासेऽसिते दले ।
दशम्यां भौमवारेऽयं ग्रन्थः पूर्तिं गतः शुभः ॥
ऋतुद्योव्योमपक्षाब्दे खैस्ते षष्ठे समाङ्गके ।
शून्याक्षे कुजवारेऽयं निश्शेषतां समागतः ॥

आन्ध्रदेशीयकरिनगरजनपदान्तर्गतभार्गवपुराभिजनेन
श्रीमतीस्वराज्यलक्ष्मी-लक्ष्मीनारायणसूनुना
सर्वशास्त्रपारावारपारीणश्रीमद्विजयपालविद्यावारिधिशिष्येण
भारद्वाजगोत्रेणोदयनाचार्येण
प्रणीतः
साग्निहोत्र-गोदानविधिः

समाप्तिमगात्
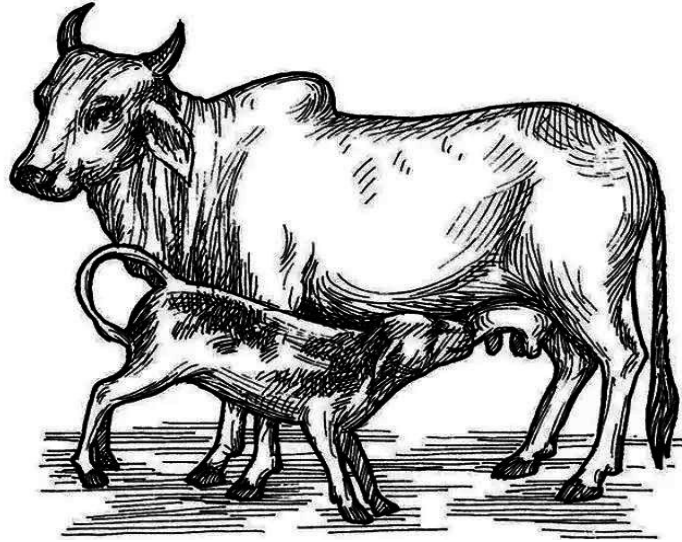
वैदिक राष्ट्रिय प्रार्थना

ओ३म् आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायताम् आ राष्ट्रे राजन्यः शूरऽइषव्योऽतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढाऽनड्वानाशुः सप्तिः। पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो नऽओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम् ॥ (यजु०अ० २२.२२)

पद्यानुवाद

ब्रह्मन् ! स्वराष्ट्र में हों द्विज ब्रह्मतेजधारी ।
क्षत्रिय महारथी हों अरि-दल विनाशकारी ॥
होवें दुधारु गौवें, पशु अश्व आशुवाही ।
आधार राष्ट्र की हों, नारी सुभग सदा ही ॥
बलवान् सभ्य योद्धा यजमान पुत्र होवें ।
इच्छानुसार वर्षें पर्जन्य ताप धोवें ॥
फल फूल से लदी हों ओषध अमोघ सारी ।
हो योग क्षेम-कारी, स्वाधीनता हमारी ॥

वन्दे धेनु-मातरम्

धर्मदां अर्थदां मातरम्
कामदां मोक्षदां मातरम्
वन्दे धेनुमातरम्
दुग्धामृतसात्त्विकबलबुद्धिप्रदायिनीम्
शुभदर्शनीम् प्रियदर्शनीम्
सुखदां वरदां मातरम्
वन्दे धेनुमातरम्
आरोग्यकारिणीम्
यज्ञार्थम् हविः प्रदायिनीम्
प्रदूषणहारिणीम् मातरम्
वन्दे धेनुमातरम्
गोमय-मलशोधक उर्वरकः,
गोमूत्रमहौषध-कृमिनाशक
त्वं योजयति भ्रात्रा भ्रातरम्
वन्दे धेनुमातरम्
ममतामयी कल्याणी,
बाधाविघ्नविनाशीनीम्
धन-धान्यप्रदायिनीम् मातरम्
वन्दे धेनुमातरम्
तव वत्स सबलहलधर, प्रियनन्दी शुभवाहन

कोटि-कोटि जनश्रद्धास्पद
जननी-सम-जीवन-दायिनीम् मातरम्
वन्दे धेनुमातरम्

दुःखदारिद्र्यविनाशिनीम्
दिव्यगुणगणविकासिनीम्
परोपकारिणीम् मातरम्
वन्दे धेनुमातरम्

त्वं हि लक्ष्मी दुर्गा च शारदा
त्वं करुणा वात्सल्यदा
श्रेयःप्रेयदाम् मातरम्
वन्दे धेनुमातरम्

गो माँ

१. गोवर्धन धारी की दुलारी गौ माँ ।
साधु सन्त मुनियों की प्यारी गौ माँ ।।
ममता की मृदु फुलवारी गौ माँ ।
पर्यावरण की रखवाली गौ माँ ।।
मानव के सदा उपकारी गौ माँ ।
कदम-कदम सुखकारी गौ माँ ।।
हाय फिर भी है दुखयारी गौ माँ

संकट में आज है हमारी गौ माँ ॥२॥

२. गो माता का दूध अमृत समान है ।
गोबर और मूत्र भी गुणों की खान है ॥
रक्तचाप मधुमेह ज्वर अस्थमा ।
केंसर जैसे रोगों का ये करे खातमा ॥
गोमूत्र के जैसा एँटि बाईटिक नहीं है ।
घी से ज्यादा कुछ स्वास्थ्यदायक नहीं हैं ॥
हृदय रोग में भी गुणकारी गौ माँ
संकट में आज है हमारी गौ माँ ॥२॥

३. काँतरे निगाहें हमें देख रही हैं ।
फैली हुई बाँहे हमे देख रही हैं ॥
चीखें और आंहें हमें देख रहीं हैं ।
अपने घर की आंहें हमें देख रही हैं ॥
हम चारा पानी का प्रबन्ध करेंगे ।
गोहत्या हम हरहाल बन्ध करेंगे ॥
हमें ही बचानी है हमारी गौ माँ
संकट में आज है हमारी गौ माँ ॥२॥

४. कत्तलखाने में जब उसे लाया जाता है ।
तीन-चार दिन तक भूखा रखा जाता है ॥
जंजीरों से उल्टा लटकाया जाता है ।
खौलता गरम पानी उसपे डाला जाता है ॥
चमड़े पर से बालों को हटाया जाता है ।

जख्मी करके लहु फिर निकाला जाता है ।।
पता नहीं जिन्दा काहे रखा जाता है ।
जिन्दा रहते चमड़ा फिर निकाला जाता है ।।
कितनी क्रूरता से मौत पाती गौ माँ
संकट में आज है हमारी गौ माँ ।।२।।

५. न केवल गोरक्षा का नारा दीजिये ।
न केवल मुँह से ही जयकारा कीजिये ।।
बे सहारा प्राणी को सहारा दीजिये ।
दूध जिसका पिया उसे चारा दीजिये ।।
अहिंसा का बुलन्द सितारा कीजिये ।
गोहत्या करने वाले को दण्ड दीजिये ।।
देखो कैसी रो रही बेचारी गौ माँ ।
संकट में आज है हमारी गौ माँ ।।२।।

६. भारत की संस्कृति कृषि प्रधान है ।
गोवंशी बैलों से खेत खलीयान हैं ।।
मशीनी देशों ने की आज जो बेजान हैं ।
दया क्षमा शांति का वो स्वाभिमान है ।।
गोमाता की हत्या ऐसा कारस्थान है ।
जख्मी का आज रहा ये हिन्दुस्थान है ।।
भारत के सबको पुकारे गौ माँ ।
संकट में आज है हमारी गौ माँ ।।२।।

७. हिंन्दू सिख ईसाई या मुसलमान है ।

हम सब भारत माता की ही सन्तान हैं ।।
हमें क्या हमारे कर्तव्यों का ज्ञान है ।
क्या जानकर भी आज हम अनजान हैं ।।
गौ माता ही भारत माँ की पहचान है ।
गोहत्या भारत माँ का अपमान है ।।
देश अगर बचाना है बचाओ गौ माँ । (५)
संकट में आज है हमारी गौ माँ ।।२।।

गौ की पुकार

- राष्ट्रकवि मैथिली शरण गुप्त

दांतो तले तृण दबाकर, गाय सभी को कह रही,
हम पशु तथा तुम हो मनुज, पर योग्य क्या तुम को यही ?
हमने तुम्हें माँ की तरह, है दूध पीने को दिया,
देकर कसाई को हमें, तुमने हमारा वध किया ।
क्या वश हमारा है भला, हम दीन हैं बलहीन हैं,
मारो कि पालो कुछ करो तुम, हम सदैव आधीन हैं ।
प्रभु के यहाँ से भी कदाचित्, आज हम असाहय हैं,
इससे अधिक अब क्या कहें, हा ! हम तुम्हारी गाय हैं ।
जारी रहा क्रम यदि यहाँ, यों ही हमारे नाश का,
तो अस्त समझो सूर्य, भारत भाग्य के आकाश का ।

जो तनिक हरियाली रही, वह भी न रहने पायेगी,
यह स्वर्ण-भारत भूमि, बस मरघट मही बन जायेगी ।

गाय कहूँ वा तुझको माय ?
अयि आबाल-वृद्ध हम सबकी जीवन भरकी धाय ।
तेरा मूत्र और गोबर भी पावे, सो तर जाय,
घर ही नहीं, खेतकी भी तू सबकी एक सहाय ।
न्योछावर है उस पशुता पर यह नरता निरुपाय,
आ, हम दोनों आज पुकारें-कहाँ कन्हैया हाय ।

गोदूध का महिमा-गान

धन्य धन्य है ! धन्य! धन्य है गोमाता का दूध!
यह गो माता का दूध ।
इसी दूध को खा-पीकर, के बने थे वीर महान ।
जिसके दूध को पी के बने थे, राम-कृष्ण बलवान ।।
गो माता को शीश नवाकर, पाया आनन्द खूब ।
यह गो माता का दूध ।।१।।

स्वर्ग के रहने वाले इसके दूध दही घृत खाते ।
तीन लोक में इसकी महिमा के गुण गाये जाते ।।
पाकर गौ को स्वर्ग लोक के, सब कुछ जाते भूल।
यह गो माता का दूध ।।२।।

नित उठ कर साँझ-सवेरे, हम इसके गुण गाते ।
और प्रेम के अमर सूत्र में हैं बन्धते जाते ।।
जैनी हो या आर्य-सनातनी सब कुछ जाते भूल ।
यह गोमाता का दूध ।।३।।

एक-एक गुण गोमाता का, है अपने को प्यारा ।
भाँति-भाँति गुण गो माता का, है नयनों का तारा ।।
मिट जाये या और जिये, यह न होगी भूल ।
यह गोमाता का दूध ।।४।।

गो हत्या के पाप से ही तो, भारत दुःख पाता है ।
गो हत्या के घोर नाश से, त्राही-त्राही होती है ।।
सत्य अहिंसा शासन अब तो, मत करना तू भूल ।
यह गोमाता का दूध ।।५।।

'कश्यप' कि है विनय प्रभूजी, गो का कष्ट मिटाओ ।
दूध, दहि घृत माक्खन का भारत भण्डार भराओ ।।
भारत राष्ट्र की हिन्दू जनता, अब मत करना भूल ।
यह गोमाता का दूध ।।६।।

जननी जनकर दूध पिलाती, केवल साल छः माहि भर ।
गो माता पय सुधा पिलाकर, पालन करती जीवन भर ।।

कौन करे आह्वान

'दयानन्द के दिव्य स्वप्न का, कौन करे आह्वान'

गौरक्षा के पावन व्रत को, कौन करे साकार ।
भौतिकता में खो चेतनता, व्यथित हुआ संसार ।।
पथ भ्रष्ट हो विकल दीन सा, भूल गया उपकार ।
घोर निराशा की आंधी में, डग-मग-डग-मग पांव ।।१।।

सोच रहे है भ्रमित सा वे, कहा करे विश्राम ।
ऋषिवर बता गये हम सबको, जीवन लक्ष महान ।।
आर्य-हिन्दू का एक लक्ष हो, एक राय हो आज ।
जाति-पंथ मत वाद दुर्ग को, कैसे तोडें आज ।।२।।

कौन करे गो-माँ का रक्षण, दानवता का संहार ।
गाय सभी को दे पायेगी, शान्ति सुधा रस पान ।।
गूँज रहे हैं मस्तिष्कों में, प्रश्न यही अभिराम ।
जटिल समस्या आज खड़ी है, गोहत्या की आज ।।३।।

महानाश की ज्वालाओं में, धधक रहा प्रिय राष्ट्र ।
उजड़ चुकी है भारत वाटिका, राष्ट्र बना श्मशान ।।
लाश पड़ी है मानवता की, क्रन्दन की है तान ।
टूटी वीणा गा न सकेगी, बिन पाये बलिदान ।।४।।

यही प्रश्न है जिसका उत्तर, मांग रहा कवि आज ।
कौन बचायेगा गो माँ को, बनकर के शिवराज ।।
सत्य मांग है गो रक्षा की, करे घोषणा आज ।

ओ३म् ध्वजा को ले कर 'हम सब' करे आज आह्वान ।।५।।
'दयानन्द के दिव्य स्वप्न का, कौन करे आह्वान'

गो महिमा गान

हम करें गाय-संवर्धन !
तन से मन से धन, तन मन धन जीवन से ।
हम करें गाय-संवर्धन ।।
अन्तर से मुख से कृति से, निश्चय हो निर्मल मति से ।
श्रद्धा से मस्तक नति से, हम करें गाय का संवर्धन ।।१।।
अपने हँसते शैशव से, अपने खिलते यौवन से ।
प्रौढ़तापूर्ण जीवन से, हम करें गाय-संवर्धन ।।२।।
अपने अतीत को पढ़कर, अपना इतिहास पलटकर ।
अपना भविष्य समझकर, हम करें गाय का चिन्तन ।।३।।
है याद हमें युग-युग की, गो पालन करते भारतवासी ।
जो गो की सेवा पथ पर, आई बन कर विपदा सी ।।४।।
श्रीकृष्ण ने अभिषेक किया था, गो माता का अरि मुण्डों से ।
हमने श्रृंगार किया था, गो माँ का स्वर्ण सिंगों से ।।५।।
वेदों में लिखा है, गो-रक्षा पालन संवर्धन ।
गो माँ जिस पर बैठी सुख से, करती थी जग का पालन ।।६।।

अब दुष्ट राज्य में प्रतिदिन, होती गो हत्यायें दिन-दिन ।
आर्यों ! अपना तन, मन, धन देकर, हम करें पुनः गौ रक्षण ।।७।।
शिवराज ने रक्षा की थी, गो हत्यारे यवन से ।
हो! राम राज्य फिर भू पर, भण्डार भरा हो घृत मक्खन से ।।८।।
'गो करुणानिधि' लिखि ऋषिवर ने, गो माँ का महत्त्व दर्शाने ।
हो शीघ्र बन्द गो वधशालायें, तब ही होगा भारत सम्पन्न ।।९।।
'केवल' की यही विनय है, गो हो माँ का घर-घर पालन ।
भारत के सब नर-नारी, व्रत लें वे यही सुपावन ।।१०।।
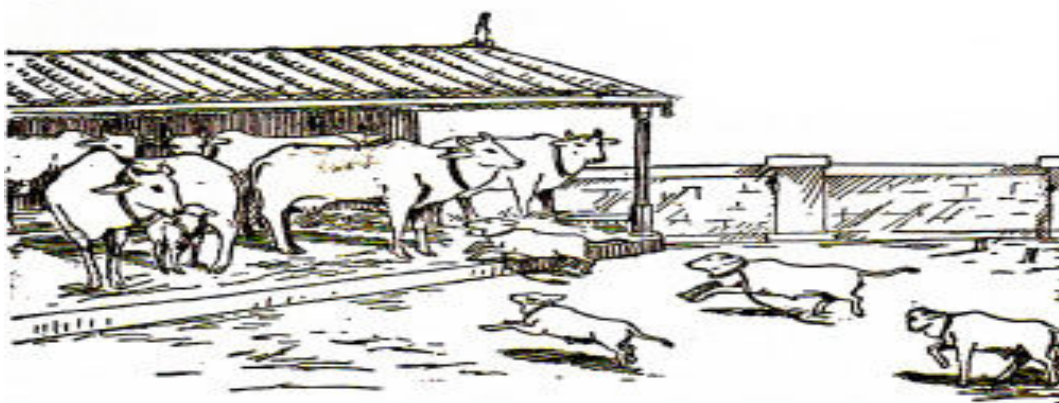
गोमहिमा

१. **गावो वन्धासः** (ऋ०१.१६८.२) गौवें वन्दनीय हैं ।

२. **रायो गवां** (ऋ०१.३३.१) गौवें ऐश्वर्य हैं ।

३. **गावो भगः** (ऋ०६.२८.५) गौवें ऐश्वर्य की निधि हैं।

४. **भद्रं गृहं कृणुथ भद्रवाचः** (ऋ०६.२८.६)
गायें मधुर ध्वनि से घर का कल्याण करती हैं ।

५. **व्रजं कृणुध्वं स हि वो नृपाणः** (ऋ०१०.१०१.८)
गोशाला बनाओ । वह मनुष्यों के लिये लाभकारी है ।

६. **आ धेनवः पयसा तूर्ण्यर्थाः** (ऋ०५.४३.१)
गायें दूध के द्वारा शीघ्र हमारा अभीष्ट पूर्ण करती हैं ।

७. **अश्रीरं चित् कृणुथा सुप्रतीकम्** (ऋ०६.२८.६)
गाय का दूध निर्बल एवं निस्तेज को हृष्ट पुष्ट बना देता है ।

८. **गोभिष्टरेमामतिं दुरेवाम्** (ऋ०१०.४२.१०,अथर्व०७.५०.७)
हम गाय के दूध द्वारा कुमति और दुर्गति को दूर करें ।

९. **गाम्...अवृक्त मर्त्यो दभ्रचेताः** (ऋ०८.१०१.१६)
मूर्ख व्यक्ति ही गाय को अपने से दूर करता है ।

१०. **गोमद्...वसु...वनेमहि** (ऋ०७.९४.९)हम गोधन को प्रप्त करें।

११. **ईमह...सुम्नस्य गोमतः** (ऋ०८.४९.९)
गायों से हमें सुख प्राप्त होता है ।

१२. **ते गृहासो घृतश्चुतो भवन्तु** (ऋ०१०.१८.१२)
हमारे घर गोघृत से परिपूर्ण हों ।

१३. **शुचि...रेक्ण...सबर्दुघायाः पय उस्रियायाः** (ऋ०१.१२१.५)
गाय का दूध ही उत्तम धन है ।

१४. **पीपाय गोर्न सेके** (ऋ०१.१८१.८)
गाय के दूध से संतृप्ति होती है ।

१५. **गोभिः ष्याम यशसो जनेषु** (ऋ० १०.६४.११)
हम जनता में गायों के कारण से यशस्वी हों ।

१६. **यस्या (गोः) देवा उपस्थे व्रता विश्वे धारयन्ते** (ऋ० ८.९४.२)
गौ के सम्मुख सब देव व्रतों का पालन करते हैं ।

१७. **धेनूर्जिन्वतम्** (ऋ० ८.३५.१८) गौओं को प्रसन्न रखो ।

१८. **आ...हुवे गां...भोजसे** (ऋ० ८.६५.३)
भोजन के लिए गायों को प्रीतिपूर्वक बुलाना चाहिए ।

१९. **विद्याम...भुजो धेनूनाम्** (ऋ१०.२२.१३)
हमें गायों से भोजन मिलता है ।

२०. **इषं ...परि गां नयध्वम्** (ऋ० १०.१६५.५)
अन्न देने वाली गौओं को चारों ओर लेजाकर चराओं ।

२१. **य एषां भृत्यामृणधत् स जीवात्** (ऋ० १.८४.१६)
जो इन गौवों का पोषण करता है, वह दीर्घजीवी होता है ।

२२. **सर्वतातिमदितिं वृणीमहे** (ऋ० १०.१००.१०)
सब को सुख देने वाली गौ को हम स्वीकार करते हैं ।

२३. **स्यां सुगवः** (ऋ० १.११६.२५) मैं उत्तम गोमान् बनूँ ।

२४. **गव्यन्त...विप्राः** (ऋ० १०.१३१.३) विद्वान् गायों को चाहते हैं ।

२५. **अदधुर्गोषु वीरान्** (ऋ० ३.३१.१०)
गोओं की रक्षा के लिए वीरों को नियुक्त करें ।

२६. नकिरेषां निन्दिता मर्त्येषु ये अस्माकं पितरो गोषु योधाः (ऋ० ३.३९.४)

गायों की रक्षा करने वाले वीरों की निन्दा कभी नहीं होती ।

२७. विश्वं स्वाद्म संभृतमुस्त्रियायां यत्सीमिन्द्रो अदधाद् भोजनाय (ऋ० ३.३०.१४)

दूध, दही, घी आदि स्वादिष्ट सभी पदार्थों को प्रभु ने भोजन के लिए गाय में स्थापित किया है ।

२८. ऊर्जयन्तीमिषमश्याम...गोः (ऋ० ५.४१.१८)

हम गौ से बलवर्धक अन्न को प्राप्त करते हैं ।

२९. गोस्तु मात्रा न विद्यते (यजु०२३.४८)

गौ एक अमूल्य निधि है ।

३०. इहैव स्त मापगात (यजु०३.२१)

गायें हमारे पास ही रहें , हमें छोड़कर न जावें ।

३१. उपहूता इह गावः (यजु०३.४३)

हमारे घरों में गाय आमन्त्रित हों ।

३२. वीरं विदेय तव देवि सन्दृशि (यजु०४.२३)

हे दिव्य गो! तुम्हारे दर्शन से मैं बलवान् पुत्र को प्राप्त करूँ ।

३३. सदा गावः शुचयो विश्वधायसः (साम०४४२)

गायें सदा पवित्र हैं और सबकी पोषक हैं ।

३४. कृण्वन्तो वरिवो गवे (साम०८३२)

गायों को सुख सुविधा दो ।

३५. अभयं...अनु गावो...विचरन्ति (अथर्व० ४.२१.४)

गौवें निर्भय होकर विचरती रहें ।

३६. **त्विषिः .....गोषु** (अथर्व० ६.३८.२)

गौ के दूध, दही, घी आदि में तेज है।

३७. **गावो घृतस्य मातरः** (अथर्व० ६.९.३)

गाय घी को उत्पन्न करने वाली है ।

३८. **कोशं दुहन्ति कलशं चतुर्बिलमिडां धेनुं मधुमतीं स्वस्तये** (अथर्व० १८.४.३०)

मधुर दूध देने वाली गाय का दोहन कल्याण के लिए किया जाता है ।

३९. **एतास्ते असौ धेनवः कामदुघा भवन्तु** (अथर्व० १८.४.३३)

ये गौवें तुम्हारे लिए यथेष्ट दूध आदि देने वाली हों ।

४०. **धेनुः सदनं रयीणाम्** (अथर्व०११.१.३४)

गाय सम्पत्तियों का भण्डार है ।

४१. **इमा या गावः स जनास इन्द्रः** (अथर्व०४.२१.५)

जिसके पास गौएँ हैं ,वह तो साक्षात् इन्द्र के तुल्य है ।

४२. **रायस्पेषेण बहुला भवन्तीः** (अथर्व०३.१४.६)

गायें गोशाला में सुख-सविधा से बहुत बढ़ें ।

४३. **ध्रुवा गावो मयि गोपतौ** (अथर्व० २.२६.४)

मुझ गोपालक के पास गाय सदा स्थिर रहें ।

४४. **समग्रः समन्तो भूयासं गोभिः** (अथर्व० ७.८१.४)

मैं गायों के चारों ओर रहकर परिपूर्ण हो जाऊँ ।

४५. **आ वयं प्याशिषीमहि गोभिः** (अथर्व० ७.८१.५)

हम गायों के साथ उन्नति को प्राप्त होवें ।

४६. **गोषु यद् यशः ....मधु तन्मयि** (अथर्व० ६.६९.१)

गौओं में जो यश एवं माधुर्य है, वह मुझे भी प्राप्त हो ।

४७. **आ गावो अग्मन्नुत भद्रमक्रन्** (अथर्व० ४.२१.१)
गौवें हमारे घर पर आकर हमें आनन्दित करती हैं ।

४८. **गावो मेदयथा कृशं चिद्** (अथर्व० ४.२१.६)
गौवें बलहीनों को बलवान् बनाती हैं ।

४९. **वशां देवा उप जीवन्ति वशां मनुष्या उत** (अथर्व०१०.१०.३४)
देव और मनुष्यों का जीवन गायों पर आश्रित है ।

५०. **एतद् वै विश्वरूपं सर्वरूपं गोरूपम्** (अथर्व०९.७.२५)
गाय में सभी देव समाविष्ट हैं । यही गाय का विराट् रूप है ।

५१. **अनागोहत्या वै भीमा** (अथर्व०१०.१.२९)
निरपराध गौ की हत्या करना बड़ा भयंकर पाप है ।

५२. **हेतिं दूरं नयतु गोभ्यः** (अथर्व० ६.५९.३)शस्त्र गौवों से दूर रहें।

५३. **मा गामनागामदितिं वधिष्ट** (ऋ० ८.१०१.१५)
गाय निरपराध है । उसका वध मत करो ।

५४. **गोजित् भूयासम्** (अथर्व०७.५०.८)
मैं गौ की रक्षा करनेवाला बनूँ ।

५५. **गां मा हिंसीः** (यजु० १३.४३) गायों को मत मारो ।

५६. **यश्च गां पदा स्फुरति** (अथर्व० १३.१.५६)
गाय को पैर से मारने वाले को दण्डित करना चाहिए ।

५७. **यदि नो गां हंसि यद्यश्वं यदि पूरुषम् । तं त्वा सीसेन विध्यामः** (अथर्व० १.१६.४)
गाय, घोड़ा और मनुष्य की हत्या करने वाले को मृत्यु दण्ड देना चाहिए ।

५८. यशोऽथो यज्ञस्य यत् पयः (अथर्व० ६.६९.३)

यज्ञ का यश गोदुग्ध ही है ।

५९. लोका इमे त्रयः पयो दुग्धमुपासते (अथर्व० १०.६.३१)

ये तीनों लोक गोदुग्ध की उपासना करते हैं, गोदुग्ध की इतनी प्रतिष्ठा है ।

६०. नो ह्यृते गोर्यज्ञस्तायते (श०ब्रा०२.२.४.१३)

गौ के विना यज्ञ सम्पन्न नहीं होता ।

६१. महांस्त्वेव गोर्महिमा (श०ब्रा०३.३.३.१)

गो की महिमा महान् है ।

६२. मनुष्याणां ह्येतासु(गोषु)कामाः प्रविष्टाः(श०ब्रा०२.३.४.३४)

मनुष्यों की कामनायें गौओं में निहित हैं ।

६३. धेन्वनडुहौ वा इदं सर्वं बिभृतः (श०ब्रा०३.१.२.२१)

गाय और बैल सारे संसार को धारण करते हैं अर्थात् भरण, पोषण करते हैं ।

६४. गौर्वरिष्ठा चतुष्पदाम् (महाभा० भीष्म० २१.३४)

सभी पशुओं में गाय सर्वश्रेष्ठ है ।

६५. भीष्म उवाच -

यज्ञाङ्गं कथिता गावो यज्ञ एव च वासव ।
एताभिश्च विना यज्ञो न वर्तेत कथंचन ॥
धारयन्ति प्रजाश्चैव पयसा हविषा तथा ।
एतासां तनयाश्चापि कृषियोगमुपासते ॥
जनयन्ति च धान्यानि बीजानि विविधानि च ।

ततो यज्ञाः प्रवर्तन्ते हव्यं कव्यं च सर्वशः ॥
पयो दधि घृतं चैव पुण्याश्चैताः सुराधिप ।
वहन्ति विविधान्भारान्क्षुत्तृष्णापरिपीडिताः ॥
मुनींश्च धारयन्तीह प्रजाश्चैवापि कर्मणा ।
वासवाकूटवाहिन्यः कर्मणा सुकृतेन च ॥

(महाभारत,अनु० ८३.१७-२१)

गौएं यज्ञका अङ्ग तथा यज्ञरूपी कही जाती है, गौओं के दूध, दही और घी के विना किसी प्रकार से यज्ञ पूरा नहीं होता। गौएं घृत और दूध से सारी प्रजा को धारण कर रही हैं, इनके पुत्र (बैल) कृषि कार्यों में वहन किये जाते हैं। विविध धान्य तथा बीज उत्पन्न किया करते हैं। उन्हीं से यज्ञ और हव्य कव्य आरम्भ होते हैं। ये गौएं तथा इनके दूध, दही और घृत अत्यन्त पवित्र हैं। ये भूख प्यास से अधिक पीडित होके भी विविध भार ढोया करती हैं। ये अपने कार्य से मुनियों तथा समस्त प्रजाओं को धारण कर रही हैं। ये निष्कपट व्यवहार करती हैं, ये सदा सत्कर्म में रत रहती हैं।

गोभिर्विप्रैश्च वेदैश्च सतीभिः सत्यवादिभिः ।
अलुब्धैर्दानशीलैश्च सप्तभिर्धार्यते मही ॥

गाय, विद्वान्, वेद, सती स्त्रियाँ, सत्यवादी, उदारशील एवं दानशील इन सातों पर ही यह भूमि आश्रित है।

गोभिस्तुल्यं न पश्यामि धनं किंचिदिहाच्युत ।
गावो लक्ष्म्याः सदा मूलं गोषु पाप्मा न विद्यते ॥

(महाभा० अनु० ५१.२६,२८)

मैं इस लोक में गौओं के सदृश कुछ भी धन नहीं देखता हूँ। गौएं ही सदा लक्ष्मी का मूल हैं, गौओं में पाप नहीं है ।

तथा गवार्थे शरणं शीतवर्षसहं महत् ।
आसप्तमं तारयति कुलं भरतसत्तम ॥

(महाभा० अनु० ६६.३०,३१)

हे भरतश्रेष्ठ! जो गौवों के वास के लिये सर्दी और वर्षा सहने योग्य उत्तम गोशाला बनवाता है, वह अपनी सात पीढियों का उद्धार करता है ।

विविधं विविधाकारं भक्ष्यभोज्यगुणान्वितम् ।
रम्यं सदैव गोवाट यः कुर्याल्लभते नरः ॥
प्रेत्यभावे शुभां जातिं व्याधिमोक्षं तथैव च ॥

(महाभा० अनु० १४५)

जो मानव उत्तम भक्ष्य-भोज्य-सम्बन्धी गुणों से तथा नाना प्रकार की आकृति वाली भाँति-भाँति की स्मरणीय गौशालाओं का सदैव निर्माण करता है, वह मृत्यु के पश्चात् उत्तम जन्म पाता और रोगमुक्त होता है ।

गा वै पश्याम्यहं नित्यं गावः पश्यन्तु मां सदा ।
गावोऽस्माकं वयं तासां यतो गावस्ततो वयम् ॥

(महाभा० अनु० ७८.२४)

मैं सदा गौओं का दर्शन करूँ और गौएँ मुझ पर कृपादृष्टि रखें। गौएँ हमारी हैं और हम गौओं के हैं। जहाँ गौएँ रहें, वहीं हम रहें।

गावो ममाग्रतो नित्यं गावः पृष्ठत एव च ।
गावो मे सर्वतश्चैव गवां मध्ये वसाम्यहम् ॥

(महाभा० अनु० ८०.३)

गौएँ मेरे आगे रहें। गौएँ मेरे पीछे भी रहें। गौएँ मेरे चारों ओर रहें और मैं गौओं के मध्य में निवास करूँ।

६६. महर्षिदयानन्द उवाच-

सर्वशक्तिमान् जगदीश्वर इस सृष्टि में मनुष्यों के आत्माओं में अपनी दया और न्याय को प्रकाशित करे कि जिससे ये सदा दया और न्याय युक्त होकर सर्वदा सर्वोपकारक काम करें और स्वार्थपन से पक्षपातयुक्त होकर कृपापात्र गाय आदि पशुओं का विनाश न करें कि जिससे दुग्ध आदि पदार्थों और खेती आदि क्रियाओं की सिद्धि से युक्त होकर सब मनुष्य आनन्द में रहें (गोकरुणानिधि, भूमिका)।

सर्वशक्तिमान् जगदीश्वर ने इस सृष्टि में जो-जो पदार्थ बनाये हैं, वे निष्प्रयोजन नहीं किन्तु एक-एक वस्तु अनेक-अनेक प्रयोजन के लिए रची है। इसलिए उनसे वे ही प्रयोजन लेना न्याय अन्यथा अन्याय है।

(गोकरुणानिधि)

जितने आरोग्यकारक और बुद्धिवर्धकादि गुण गाय के दूध और बैलों में होते हैं उतने भैंस के दूध आदि में नहीं हो सकते, इसलिए आर्यों ने गाय सर्वोत्तम मानी है (गोकरुणानिधि)।

गौ आदि पशुओं के नाश होने से राजा और प्रजा का भी नाश हो जाता है क्योंकि जब पशु न्यून होते हैं तब दुग्धादि पदार्थ और खेती आदि कार्यों की भी घटती होती है (गोकरुणानिधि)।

जैसे पृथिवी महान् ऐश्वर्यों को बढ़ाती है वैसे गाएँ अत्यन्त सुख देती हैं इससे ये गायें कभी किसी को मारनी न चाहिए (ऋ० १.१६४.२७)।

एक गाय के शरीर से दूध, घी, बैल, गाय उत्पन्न होने से एक पीढ़ी

में चार लाख पिचहत्तर सहस्र छः सौ मनुष्यों को सुख पहुँचता है वैसे पशुओं को न मारें, न मारने दें (सत्यार्थप्रकाश दशम समु०) ।

मनुष्यों को चाहिए कि गौ आदि पशुओं को भी न मारें और न मरवावें तथा न किसी को मारने दें । (यजु० १२.७३) ।

मनुष्यों को उचित है कि एक खुर वाले घोड़े आदि पशुओं और उपकारक वन के पशुओं को भी न मारें । जिन के मारने से जगत् की हानि और न मारने से सब का उपकार होता है उन का सदैव पालन पोषण करें। (यजु० १३.४८)

जो मनुष्य पशुओं की संख्या और बल को बढ़ाते हैं वे आप भी बलवान् होते और जो पशुओं से उत्पन्न हुए दूध और उस से उत्पन्न हुए घी का सेवन करते, वे कोमल स्वभाव वाले होते हैं और खेती करने आदि के लिये इन बैलों को युक्त करते हैं वे धनधान्ययुक्त होते हैं (यजु० २१.४१) ।

जो उत्पन्न करने (वाले माता-पिता)और विद्या देने वाले विद्वान् हैं उनका घी आदि पदार्थ वा गौ आदि के दान से यथायोग्य सत्कार करना चाहिए (यजु०२४.१८)।

जो मनुष्य पशुओं की उन्नति और पुष्टि करते हैं वे नाना प्रकार के सुखों को पाते हैं (यजु० २४.७) ।
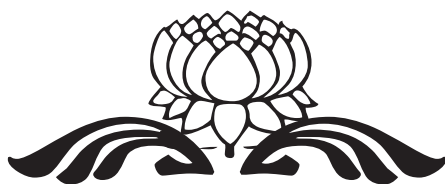
विनियुक्त मन्त्रों का अर्थ

गोदान में प्रमाण

(पृष्ठ-१)

जो दक्षिणा में घोड़ा, गौ, चांदी, सोना और अन्न का दान **(ददाति)** देता है और जो घोड़ादियों को दान में **(वनुते)** स्वीकार करता, संरक्षण करता है; उन की इन प्रवृत्तियों को सर्वभूतान्तरात्मा परमेश्वर जानता हुआ दक्षिणारूपी पुण्यकर्म को कवच के समान सब विघ्नों, कष्टों, दुःखों और पापवासना रूप शरों का रक्षक बनाता है (ऋ० १०.१०७.७)।

प्रत्येक मनुष्य को दानशील होना चाहिए । वेद के विद्वानों को, ब्रह्मविदों को सदा वश में रहने वाली गौ[१] का दान करना चाहिए । ऐसा दान सन्तान सुख का प्रदान करता है (अथर्व० १२.४.१) ।

ब्राह्मणों को वशा जाति की गौ देने से, वे वेदविद् ब्राह्मण उसके दूध से यज्ञ करते हैं । यज्ञ से सब देव संतुष्ट एवं संपुष्ट होते हैं और वे सब मनुष्यों का हित करते हैं । इस प्रकार वेदविद्वान् को दी हुई गौ सबकी रक्षा करती है (अथर्व० १२.४.१०) ।

---

१. वशा सूक्त (अथर्व० १०.१०; १२.४) के मन्त्रों का अर्थ वेदवाणी परक भी है । पर यहाँ प्रसंगानुकूल गाय परक अर्थ ही प्रस्तुत किया गया है । इस का आधार इस प्रकार है - ''धुक्षे......क्षीरं.....वशे त्वम्, वशाया दुग्धमपिबन् (१०.१०.८,३०); सुदुघा......वशा....दुहे, वशायास्तत्प्रियं यद्देवत्रा हविः स्यात् (१२.४.३५,४०) इत्यादि ।

वेदविद् याज्ञिकों को गौ का दान दिया जाना और उन गौओं के दूध, दही, घी आदि से यज्ञ, याग आदि किया जाना गायों के लिए भी प्रियकर, आनन्ददायक है। क्योंकि इसी से उनके जीवन की सार्थकता है। (अथर्व० १२.४.४०)

विलिप्ती (जिस गाय के दूध में घी की मात्रा अधिक हो), सूतवशा (वशा जाति की गौ को उत्पन्न करने वाली अथवा सूत के ही वश में रहने वाली), वशा (जो सब के वश में रहती हुई प्रचुर मात्रा में दूध देती है) ये तीन वशा गौ की जातियाँ हैं । इनका दाता प्रजापति के प्रति निरपराध होता है (अथर्व० १२.४.४७) ।

गोदान के प्रयोजन

(पृष्ठ-२)

सौ मानवों का भोजन देने वाली दुधारु गौ को जो मालपूवों के साथ दान में देता है, वह द्युलोक नामक स्वर्ग को, दिव्यता को प्राप्त करता है (अथर्व० १०.९.५) ।

जो व्यक्ति अनेक मनुष्यों को भोजन देने में समर्थ दुधारु गौ को सुवर्ण के आभूषणों से अलंकृत करके दान करता है, वह केवल स्वर्ग लोक को ही नहीं, अपितु इस पृथिवी लोक के भोग्य वस्तुओं, सुख एवं प्रतिष्ठा आदि को भी प्राप्त करता है (अथर्व० १०.९.६) ।

जो मनुष्य अनेक मानवों को पायसादि भोज्य पदार्थों के द्वारा संतृप्त करने वाली गौ का दान करता है वह समस्त लोकों में प्रतिष्ठित होता है (अथर्व० १०.९.१०) ।

सदा वश में रहने वाली दुधारु गौ को दान करने वाला इन तीन

लोकों के अतिरिक्त स्वर्लोक को भी प्राप्त करता है ।

(अथर्व० १०.१०.३२,३३)

(पृष्ठ-३)

विना सींग की वृद्ध गौ के दान से दाता के आत्मीय जन मर जाते हैं, लंगडी-लूली गाय के दान से दाता गड्ढे में गिर जाता है, विपत्तियों से ग्रसित होगा, छिन्न-भिन्न, दुर्बल गाय के दान से दाता का घर जल जाता है, कानी गाय के दान से दाता का सम्पूर्ण ऐश्वर्य, यश नष्ट होता है।

(अथर्व० १२. ४.३)

अथ विधिः

वायु और सूर्य किरणों का सेवन करती हुई अर्थात् खुले मैदान में घास चरकर जो पूर्ण स्वस्थ हैं, ऐसी गायें हमारी गोशाला में आवें (अथर्व० २.२६.१) ।

हमारी इस गोशाला में गौवें आकर एकत्रित हों, उत्तम-उत्तम गायों का पालक जानता हुआ उन्हें गोष्ठ में ले आवें और अनुकूल मतिवाली गृहपत्नी उन्हें अन्न (दाना), घासादि देकर अन्दर ले जावें एवं नियत स्थान पर इन्हें प्रीति से बांधे (अथर्व० २.२६.२) ।

सभी ऐश्वर्यों के मूल आधारभूत गाय रम्भाती हुई, अपनी सन्तति से प्यार करती हुई हमारे सम्मुख उपस्थित हुई है । न मारने योग्य अर्थात् संरक्षणीय यह गाय सभी स्त्री-पुरुषों को दूध दुहें और महत् सौभाग्य को प्राप्त करने के लिए बढें (ऋ० १.१६४.२७) ।

(पृष्ठ-४)

गौवें हमें सब ओर से प्राप्त हों और हमारा कल्याण करें । वे गोशाला में रहकर हमें आनन्दित करें । हमारे समीप रहती हुईं विभिन्न सुन्दर रूप वाली बछड़ी एवं बछड़े दें और अपने स्वामी के निमित्त उषःकाल से पूर्व पूर्व ही दूध प्रदान किया करें (ऋ० ६.२८.१) ।

(पृष्ठ-५)

गौवें सदा, सर्वांशतः पवित्र हैं क्योंकि वे दूध, गोबर, गोमूत्र आदि के द्वारा आबालवृद्ध सभी मनुष्यों का पालन-पोषण एवं चिकित्सा आदि करती हैं । इस प्रकार दिव्यता के कारण वे निष्पाप होती हैं ।

(साम० ४४२)

हे अवध्य गौ ! उत्पन्न होते समय और उत्पन्न होने पर तुझे हमारा प्रणाम है । तुम्हारें बाल, खुर और रूप आदि के लिए भी हमारा नमन है।

(अथर्व० १०.१०.१)

गौ के दो सींग मानो प्रजापति और परमेष्ठी देव हैं । शिर, माथा एवं गले की घाँटी क्रमशः इन्द्र, अग्नि और यम है ।।१।।

राजा सोम मस्तिष्क है, इसके दो जबड़े द्युलोक तथा भूलोक है ।।२।।

इसकी जिह्वा, दांत, गर्दन, कन्धे तथा ककुद (कुबड़) क्रमशः बिजली, मरुत्, रेवती, कृत्तिका और सूर्य हैं ।।३।।

वायु सब अवयव तथा स्वर्गलोक कृष्णद्र है, धारक शक्ति पृष्ठवंश की सीमा है ।।४।।

(पृष्ठ-६)

श्येन गोद है, अन्तरिक्ष पेट है, बृहस्पति ककुद है, बृहती (छन्द) हड्डी है ॥५॥

देवपत्नियाँ पृष्ठभाग है, उपसद इष्टियाँ पसलियाँ हैं ॥६॥

मित्र और वरुण कन्धे हैं, त्वष्टा और अर्यमा बाहुभाग हैं, महादेव बाहु हैं ॥७॥

इन्द्राणी गुह्यभाग है, वायु पूँछ है, पवमान केश हैं ॥८॥

ब्राह्मण और क्षत्रिय कटिभाग हैं, बल जांघें हैं ॥९॥

धाता एवं सविता टकने हैं, गन्धर्व जांघें हैं। अप्सराएँ खुरभाग हैं और अदिति खुर हैं ॥१०॥

चेतना उसका हृदय है, मेधाबुद्धि यकृत् है, व्रत (यज्ञनियम) उसकी आंतें हैं ॥११॥

क्षुधा कोख है, अन्न बड़ी आंत है, पहाड़ छोटी आंत है ॥१२॥

क्रोध गुर्दे हैं, मन्यु अण्डकोश है, प्रजा जननेन्द्रिय है ॥१३॥

नदी सूत्रनाडी है, वर्षापति मेघ स्तन है, गरजने वाला मेघ दुग्धाशय हैं ॥१४॥

विश्वव्यापि आकाश चमड़ा है, औषधियाँ रोंगटे हैं, नक्षत्र रूप है ॥१५॥

देवजन गुदा है, मानव आंतें हैं, भक्षक प्राणी उदर है ॥१६॥

राक्षस रक्त है, अन्य लोग अपचित अन्न है ॥१७॥

(पृष्ठ-७)

मेघ चर्बी है, मरण मज्जा है ॥१८॥

बैठना और उठना क्रमशः अग्नि तथा अश्विनौ हैं ॥१९॥

पूर्व दिशा में ठहरना इन्द्र है और दक्षिण दिशा में ठहरना यम है ॥२०॥

पश्चिम दिशा में ठहरना धाता है एवं उत्तर दिशा में ठहरना सविता है ॥२१॥

तृणों को प्राप्त होने पर राजा सोम बनता है ॥२२॥

देखनेवाला सूर्य और लौट आने पर आनन्द है ॥२३॥

जोते जाने पर सब देव होते हैं, जोतने पर प्रजापति और छोडने पर सब कुछ बनता है ॥२४॥

यह निस्संदेह गोरूप है, यही गौ का विश्वरूप तथा सर्वरूप है ॥२५॥

जो इस बात को जानता है, उसके समीप विश्वरूपी और सर्वरूपी सब पशु रहते हैं ॥२६॥ (अथर्व० ९.७.१-२६)

यह गौ दुष्टों को रुलाने वाले वीर पुरुषों एवं रोगों को दूर करने वाले की माता है अर्थात् मनुष्यों को वीर एवं स्वस्थ बनाने वाली है । यह गाय शरीर में वसने वाले समस्त प्राणियों की दुहिता है अर्थात् उनकी शक्ति को निरन्तर दुहने वाली है, सुख भरने वाली है । गाय सब सद्‌गुणों का दान-आदान करने वाले की स्वसा (स्व+असा) है अर्थात् सब दुर्गुणों को नष्ट कर सद्‌गुणों को धारण करने वाली है । यह गौ अमरत्व अर्थात् निरोगता के साधनभूत दूध आदि का केन्द्र है । इसलिए ज्ञानी मनुष्य से मैं (ईश्वर) आदेश देता हूँ कि निरपराध गाय का वध मत करो ।

(ऋ० ८.१०१.१५)

सूर्य के समान प्रकाशवाला कौन है? समुद्र के समान जलाधार कौन है? पृथिवी से बड़ा व अधिक वर्षों का पुराना कौन है? किसका परिमाण नहीं है ? (यजु० २३.४७) ।

ब्रह्म सूर्य के समान प्रकाशमान है, समुद्र के समान जलाधार द्युलोक है, पृथिवी से बड़ा व अधिक वर्षों का पुराना सूर्य है, गौ (के गुणों) का परिमाण (सीमा) नहीं है (यजु० २३.४८) ।

(पृष्ठ-८)

ब्राह्मण, राजा, गाय, बैल, चावल, जौ और शहद ये सात मधु हैं। जो इन सात मधुओं को जानता है, वह मधुवाला होता है ।

(अथर्व० ९.१.२२)

हे गोओं ! तुम दुर्बल को भी पुष्ट करती हो, निस्तेज को तेजस्वी, सुन्दर बनाती हो । हे शुभ शब्दवाली गौवों । तुम घर का कल्याण करती हो, इसलिए सभाओं में तुम्हारे दूध आदि अन्न का बड़ा यश गाया जाता है (ऋ० ६.२८.६) ।

द्युलोक, अन्तरिक्षलोक और भूमि पर रहने वाले सभी देवों के लिए तू सदा ही दूध, घी तथा अन्य मधुर पदार्थ प्रदान करती हो ।

(अथर्व० १०.९.१२)

हे गौवों ! हम लोग तुम्हें सुख से रहने योग्य सुन्दर गोशाला में रख कर सर्वविध सुखसाधनों एवं पुष्टिकारक उत्तम-उत्तम पदार्थ प्रतिदिन प्रदान करेंगे और बहुला, कामधेनु, नन्दिनी आदि सुन्दर नामों से ही पुकारेंगे (अथर्व० ३.१४.१) ।

(पृष्ठ-९)

सरलतया अधिक दूध देने वाली इस गौ को मैं (दान के निमित्त) अपने समीप बुलाता हूँ। और ग्रहीता से मेरा निवेदन है कि आप इसे उत्तम हाथवाला (शुद्ध मनवाला) होकर ही दुहे। परमात्मा हमारे इस पुनीत कार्य को अनुज्ञा दे (ऋ० १.१६४.२६)।

मधुरयुक्त एवं घृतसंपृक्त दिव्य दूधवाली इस गाय को मैं विद्वानों के हाथों में समर्पित करता हूँ। जिस कामना वाला मैं अब गोदान कर रहाँ हूँ, वह मेरी सभी सत्कामनाओं को पूरा करें और हम सब ऐश्वर्यशाली बनें (अथर्व० १०.९.२७)।

गौवें ही परमैश्वर्य हैं, अतः परमेश्वर मुझे गौवें प्रदान करें। गोदुग्ध ही सोम में मिलाने योग्य सर्वश्रेष्ठ भक्ष्य पदार्थ है। हे मनुष्यों ! ये गायें ही परमैश्वर्यशाली हैं, इसीलिए मैं इन्हें हृदय से, मन से चाहता हूँ।
(ऋ० ६.२८.५)

हमारे पास गौवें हों, सन्ताने हों और हमारे शरीर में बल हो। देवलोग उन सब को बैल का दान करने वाले को भी प्रदान करें।
(अथर्व० ९.४.२०)

(पृष्ठ-१०)

हे गौओं ! हमारे इस गोशाला में अपने वत्सों एवं अन्य गायों के साथ प्रेमपूर्वक मिलकर रहती हुई, गोहन्तक मनुष्य, व्याघ्र आदि हिंसकों के भय से रहित होकर गोबर और मूत्र के द्वारा खाद को उत्पन्न करने वाली, उत्तम गुणयुक्त मधुर दूध को धारण करने वाली तू निरोग की अवस्था में हमारे समीप रहो। (अथर्व० ३.१४.३)

हे गोओं ! तुम हमारे इस गोशाला में ही आओ और हथिनियों के समान परिपुष्ट होजाओ, तदनुकूल ग्रास का ग्रहण करो । हमारे इसी गोशाला में सन्तानें उत्पन्न करो तथा मुझ गोशालाधिपति पर तुम्हारा पूर्ण प्रेम हो, तुम मुझे सदा पहचानती रहो (अथर्व० ३.१४.४) ।

हे गायों ! यह गोशाला तुम्हारे लिए सुखकारी हो, यहाँ पर तुम शालिधान्य के समान शक्तिशाली दूध आदि प्रदान कर हमें परिपुष्ट करो। यहीं पर वत्सों को उत्पन्न करती हुई हमारे साथ प्रेमपूर्वक सम्बद्ध रहो।
(अथर्व० ३.१४.५)

मुझ गोरक्षक के साथ गायें मिलकर रहें । इस घर में जो यह गोशाला है, वह तुम्हारा पोषण करने वाली है । हमारे धनाद्यैश्वर्यों से इस गोशाला में तुम्हारी संख्या खूब बढ़ें और चिरकाल तक जीवित रहें । तुम्हारे साथ हम भी चिरंजीवी बनें (अथर्व० ३.१४.६) ।

हे गौ ! तू अवध्य है, पूजनीय है । तुम उत्तम तृण, धान्यादि खाती हुई भाग्यवती हों । तुम्हारे पालन-पोषण से हम भी भाग्यवान् बनें । तुम सदैव शुद्ध हरा घास चरती हुई, जल का पान करती हुई सन्तुष्ट रहना ।
(ऋ० १.१६४.४०)

(पृष्ठ-११-१२)

हे परमेश्वर ! हम अन्नादि पदार्थों के लिए एवं बलादि के लिए तेरा आश्रय लेते हैं । आप सब पदार्थों को उत्पन्न कर प्रदान करने वाले हो। हमें यज्ञ-याग, योगादि सर्वोत्तम कर्म के लिए प्रेरित कीजिये । अवध्य गौ आदि पशु बढें, परिपुष्ट हों, सन्तानयुक्त हों और सदा निरोग हों । वे किसी क्रूर मनुष्यों के आधीन न होकर गोरक्षक के आधीन में ही रहें। हे ईश्वर! तू यज्ञपुरुष के पशुओं की रक्षा कर (यजु० १.१) ।

अवध्य तथा अनेक मनुष्यों को अन्नादि पदार्थों को देने वाली हे गौ! तुम्हारे प्रत्येक अंग, प्रत्यंग दाता के लिए अत्यन्त मधुर एवं बलदायक दूध, दही, घी आदि प्रदान करें अर्थात् अपने सम्पूर्ण दिव्य शक्तियाँ दाता को दे देना, दाता को किसी पदार्थ की न्यूनता न रहें ।

(अथर्व० १०.९.१३-२४)

अथाग्निहोत्रम्

(पृष्ठ-१३)

जिन घरों में सुन्दर, सुनहरे एवं स्वस्थ गायें रहती हैं, उन्हीं घरों में हम लोग निवास करना चाहते हैं, क्योंकि वही स्थान अत्यन्त प्रशंसनीय सुखकारक परमधाम (स्वर्ग) है (ऋ० १.१५४.६) ।

जो अभ्युदय का अभिलाषी आत्मा इन्द्रियों से ज्ञान प्राप्त करने वाले द्विपद एवं चतुष्पद प्राणियों पर अपना स्वामित्व व स्नेहभाव रखता है, वह पशुपति सब प्रकार से एवं निर्विघ्नता से उपासना के योग्य परमात्मा को और धनाद्यैश्वर्यों को भी प्राप्त करता है (अथर्व० २.३४.१) ।

गौ आदि पशु, घोड़े और मनुष्य भी एक साथ मिलजुलकर रहें और साथ में हमारे घरों में धान्य भी पर्याप्त मात्रा में प्रवृद्ध हों । इन सबके अनुकूल एवं हितकर हवि के द्वारा मैं आहुति देता हूँ (अथर्व० २.२६.३)।

मैं गोघृत के साथ-साथ बलकारक गाय के दूध आदि का भी पूर्ण उपयोग करता हूँ । हमारे वीर पुत्र भी इनका खूब सेवन करते हैं । अतः इसके लिए मुझ गोपालक के पास बहुत से गाय सदा स्थिरता से रहें (अथर्व० २.२६.४)।

(पृष्ठ-१४)

यह गौ आदित्य ब्रह्मचारियों की माता, निर्मात्री है, वसु ब्रह्मचारियों के लिए गाय दुहिता है, सब सद्गुणों की प्रपूरिका है, सभी प्रजाओं के लिए यह प्राणरूप है और अधिक क्या कहें, यह तो सब के लिए अमृत स्वरूप है । यह गाय अत्यन्त हितकारी, रमणीय, शक्तिप्रद एवं तेजोदायक है । इस प्रकार यह मनुष्य मात्र के हित के लिए ही चरती है (अथर्व० ९.१.४)।

ब्रह्म सूर्य के समान प्रकाशमान है, समुद्र के समान जलाधार द्युलोक है,पृथिवी से बड़ा व अधिक वर्षों का पुराना सूर्य है,गौ (के गुणों) का परिमाण (सीमा) नहीं है (यजु० २३.४८) ।

सभी मानवों के द्वारा उपासना करने योग्य हे परमेश्वर ! हम गौ के दुग्धादि के द्वारा और यवादि अन्न के द्वारा दुःखदायक सभी दुर्बुद्धि एवं भूख को नष्ट करें । हम उज्वल जीवनवालों में प्रथम हों । हम परस्पर राग, द्वेष, काम, क्रोध, मोह आदि के द्वारा हिंसित न होते हुए, आसुरीभावों को विनिष्ट करने वाली शक्ति के द्वारा धनाद्यैश्वर्यों को प्राप्त करें ।

(अथर्व० ७.५०.७, ऋ० १०.४२.१०)

मैं अपने पुरुषार्थ से गाय, घोड़े, धन और स्वर्ण का विजेता, रक्षक बनूँ । मैं पुरुषार्थ से ही इनका रक्षक अवश्य बनूँगा (अथर्व० ७.५०.८) ।

हे अवध्य गाय ! तू पुजनीय है, तुम उत्तम तृण, धान्यादि का सेवन करने वाली सौभाग्यशाली प्राणी हो। तुम्हारा पालन-पोषण करने वाले मनुष्य भी भाग्यवान् बनता है । अतः गाय को सदा शुद्ध घास, पानी आदि देकर प्रसन्न रखना चाहिए (ऋ० १.१६४.४०) ।

जिन गायों की सहायता से अर्थात् उनके दूध आदि से देवों का यजन करता है तथा दान भी देता है, उन गायों के साथ गोस्वामी चिरकाल तक युक्त रहता है और उनकी गायें कभी नष्ट नहीं होतीं, न चोर चुराते हैं, दुःख देनेवाला कोई शत्रु इन पर अपना अधिकार नहीं चलाता ।

(ऋ० ६.२८.३)

(पृष्ठ-१५)

प्रभु कृपा से न हमारी गौवों का युद्ध द्वारा अपहरण होता है, ना ये वधशाला मैं पहुँचती हैं । यज्ञशील पुरुषों की यज्ञभूमियों में ही ये विचरती हैं और यज्ञार्थ घृत-दुग्ध आदि को प्राप्त कराती हैं (ऋ० ६.२८.४)।

परमेश्वर के द्वारा स्थिरवृत्ति वाले मनुष्य को दी हुई गाय, जो कि सुख से दुहने योग्य, बछड़े के साथ रहने वाली और नाना वर्णो वाली है। ज्ञानी के साथ मित्रता करता हुआ इच्छा के अनुसार उसके शारीरिक सामर्थ्य को बढ़ावें (अथर्व० ७.१०४.१) ।

हे अवध्य गौ ! तेरे बाल शुद्ध करने वाली प्रोक्षणियाँ बनें । तेरी जिह्वा स्वच्छता का साधन है । इसलिए तू शुद्ध, पवित्र होकर, यज्ञोपयोगी बन कर अनेक लोगों को संतृप्त करने वाली हे गौ! तू स्वर्ग तुल्य विद्वानों के घर को प्राप्त होती है (अथर्व० १०.९.३) ।

हे अहन्तव्य गौ ! तू घी, दूध आदि पुष्टिकारक एवं उत्तमोत्तम पदार्थों को सींचने वाली देवी है, अत एव तू विद्वान् के ही सामीप्य को प्राप्त होती है । सैंकड़ो मनुष्यों को शक्ति प्रदान करने वाली हे गौ! तुम्हें परिपक्व, परिपुष्ट करने वाले गोपालक को तू दुःखी मत कर ।

(अथर्व० १०.९.११)

मधुरयुक्त एवं घृतसंपृक्त दिव्य दूधवाली इस गाय को मैं विद्वानों के हाथों में समर्पित करता हूँ। जिस कामना वाला मैं अब गोदान कर रहाँ हूँ, वह मेरी सभी सत्कामनाओं को पूरा करें और हम सब ऐश्वर्यशाली बनें (अथर्व० १०.९.२७)।

(पृष्ठ-१६)

जैसे एक घर में रहने वालों का समानरूप में भरण-पोषण होता है, वैसे ही यह पृथिवी विविध भाषाओं वाले और भिन्न-भिन्न स्वभाववाले वा कर्मवाले जनसमुदाय का भरण-पोषण करती हुई मुझे हजारों प्रकार के धन प्रदान करें, जैसे स्थिर खड़ी हुई और उछलकूद न करती हुई दुधारु गौ दूध की हजारों धाराएँ देती है (अथर्व० १२.१.४५)।

जो वायुएँ गौवों में दूध लातीं हैं, ओषधियों में रस उत्पन्न करतीं हैं, अश्वादि पशुओं में वेग और स्वस्थता को उत्पन्न करतीं हैं वे हमें भी पापभावनाओं से मुक्त कर सुखी बनावें (अथर्व० ४.२७.३)।

जो वेद में प्रतिपादित सात मधुओं को जानता है, वह अत्यन्त मधुर जीवनवाला होता है। वे सात मधु इस प्रकार हैं- १.वेदविद् विद्वान्, २. धार्मिक राजा, ३. गाय, ४. बैल, ५. धान, ६. जौ और ७. शहद (अथर्व० ९.१.२२)।

विनियुक्त मन्त्रों की वर्णानुक्रमणिका

वैदिक परम्परा का संरक्षक

निगम-नीडम् (वेदगुरुकुलम्)

ओ३म् यः पावमानीरध्येत्यृषिभिः सम्भृतं रसम् ।
सर्वं स पूतमश्नाति स्वदितिं मातरिश्वना ॥
पावमानीर्यो अध्येत्यृषिभिः सम्भृतं रसम् ।
तस्मै सरस्वती दुहे क्षीरं सर्पिर्मधूदकम् ॥

(ऋ० ९.६७.३१,३२)

परमेश्वर की कल्याणी वाणी वेद का अध्ययन-अध्यापन एवं मनन-चिन्तन करने वाला व्यक्ति ऋषियों द्वारा प्राप्त किये मधुर रस, समस्त सुख-साधनों को प्राप्त करता है । अर्थात् ऋषि, मुनियों ने जिस वैदिक मार्ग से इहलौकिक और पारलौकिक सुखों को प्राप्त किये हैं, प्रत्येक व्यक्ति भी उस वैदिक मार्ग का पथिक बन कर परम सुख शान्ति को प्राप्त कर सकता है ।

राजा-महाराजा से लेकर सामान्य नागरिक तक प्रत्येक व्यक्ति उन ऋषि-मुनियों के द्वारा प्रदर्शित वैदिक मार्ग का अनुसरण कर अभीष्ट सुख शान्तियों को प्राप्त किया करते थे । **''वेदाः प्रत्यक्षमाचारः''**(महा० अनु० १४७.१७) इस आर्यावर्त के सदाचार का उपदेष्टा साक्षात् ईश्वरीय ज्ञान वेद था अर्थात् ईश्वर ही देश का परम गुरु था । फलतः **''न मे स्तेनो जनपदे न कदर्यो न मद्यपः । नानाहिताग्निर्नाविद्वान् न स्वैरी स्वैरिणी कुतः ॥''**(छा० उप० ५.११.५)॥ मेरे राज्य में न चोर है, न कंजूसी है, न शराबी है, न ही कोई अयाज्ञिक है, न अविद्वान् है और न कोई व्यभिचारी व व्यभिचारिणी, जैसी घोषणायें इस देश के राजा लोग

किया करते थे । सम्पूर्ण विश्व के लिये आदर्शभूत वैदिक संस्कृति, सभ्यता, वर्णाश्रमधर्म, राजनीति, अर्थव्यवस्था आदि इस आर्यावर्त में विद्यमान थीं। सारे संसार में यह आर्यावर्त पारसमणि के तुल्य देदीप्यमान था, गुरुस्थानीय था । इसीलिये मनु महाराज ने कहा था कि **''एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः ।।''**(मनुस्मृति) निखिल जगत् के सभी मानव इस आर्यावर्त में जन्में ब्राह्मणों = वेदज्ञों से अपने-अपने चरित्र की शिक्षा प्राप्त करें । परन्तु आज वही स्वर्णिम भारतदेश विपरीत, विचित्र, विपत्कर, विकृत परिस्थितियों में दिग्बन्धित हो गया है। इसकी संस्कृति व सभ्यता, शिक्षा, चिकित्सा, राजनीति, सुरक्षा, अर्थव्यवस्था आदि अन्य देशों पर निर्भर है । सर्वत्र अशान्ति, अवनीति, अनैतिकता, अश्लीलता, असुरक्षा अभाव, आतंक आदि का ताण्डवनृत्य हो रहा है । इसका मूल कारण है कि- हम अपने दिव्य वेदपरम्परा को एवं प्राणिमात्र को सुख-शान्ति प्रदान करने वाली वैदिक संस्कृति को भूल गये, साथ में भारतमाता के मानसपुत्र राजा-महाराजाओं की धर्मबद्ध एवं न्यायोचित राजनीति आदि को भी भूल गये । इसलिए भारत पर आच्छादित इस भीषण विषम परिस्थिति को दूर कर पूर्व की भांति देश की गरिमा एवं सुख-शान्तियों को संस्थापित करने हेतु हमें वेद और वैदिक संस्कृति की ओर लौटना होगा और **''निष्कारणो धर्मः षडङ्गो वेदोऽध्येयो ज्ञेयश्च''** निष्कामभाव से छः वेदांगों सहित वेद का अध्ययन करना चाहिए, जानना चाहिए और उसका अनुसरण करना चाहिए - महर्षि पतञ्जलि के इस आदेश को शिरोधार्य करना होगा, अन्य कोई मार्ग व उपाय नहीं है ।

इसी अनिवार्यता को पहचानकर महर्षि देव दयानन्द सरस्वती ने भारतदेश के पूर्ववैभव को पुनः प्रतिष्ठित करने के लिए वेदों के प्रचार निमित्त अपना सम्पूर्ण जीवन समर्पित किया तथा यावज्जीवन विभिन्न प्रकार के महत् कार्यों को सम्पन्न किया । उन्हीं प्रयत्नों के अन्तर्गत इन्होंने चार

गुरुकुलों की भी स्थापना की थी । तत्पश्चात् उन्हीं के अनुयायी स्वामी श्रद्धानन्द आदि अनेक तपःसम्पन्न विद्वानों ने उस गुरुकुल परम्परा को निस्स्वार्थ से अहर्निश पुरुषार्थ कर पुष्पित, पल्लवित किया और उन्नत शिखर तक पहुँचाया । परन्तु उस प्रकार का प्रयत्न दक्षिणभारत में नहीं हो पाया। तत्परिणामतः भारत के दक्षिण भाग में वैदिक विद्वान्, पण्डित, संन्यासी, वानप्रस्थी, ब्रह्मचारी, प्रचारक, पुरोहित आदि का अभाव रहा है, जिसके कारण विधर्म प्रबल होता जा रहा है । इस अभाव की सम्पूर्ति के लिए और महर्षि देव दयानन्द के संकल्पों को साकार करने एवं आर्षपरम्परा को दक्षिणप्रान्तों में भी पूर्णतः परिव्याप्त करने के महदुद्देश्य से अविभक्त आन्ध्रप्रदेश के मेदक जिला, गज्वेल मण्डल, पिडिचेड़ ग्राम के समीप स्वच्छ, निर्मल, एकान्त, प्रशान्त, वातावरण से युक्त चार एकड़ की भूमि में ३-अप्रैल,२००५ में इस वेदगुरुकुल की स्थापना की गई ।

अत्यन्त सीमित साधनों से प्रारम्भ किया गया यह गुरुकुल ईश्वर के अनुग्रह एवं धार्मिक सज्जनों के सहयोग से स्वल्प काल में ही अपने लक्ष्य की ओर अग्रसर होने में पूर्ण सफल रहा है ।

इस समय विविध प्रान्तों से आगत (३०) विद्यार्थी शिक्षा, व्याकरण, निरुक्त आदि सभी वेदाङ्ग एवं दर्शनादि शास्त्रों का अध्ययन मनोयोग से कर रहें हैं । सभी विद्यार्थी प्रातः ४ बजे से रात के ९.३० बजे तक नियमित दिनचर्या के साथ प्रतिदिन १० घण्टे अध्ययन में संलग्न रहते हैं । प्रतिदिन नियमितरूप से प्रातः-सायम् ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, ध्यान, जप, प्राणायाम, व्यायाम, आसन, लाठी-तलवारबाजी तथा अन्य क्रीडादि करते हैं ।

विद्यार्थियों को शास्त्रीय अध्ययन के साथ-साथ धार्मिक, नैतिक, आध्यात्मिक विषय भी हृदयंगम कराये जाते हैं । इतना ही नहीं देशभक्ति, महापुरुषों का आदर्श जीवन चरित्र, भारतीय विशुद्ध इतिहास आदि पढ़ाये जाते हैं । अध्ययन के साथ अध्यापन, लेखन, प्रवचन आदि कलाओं का

भी अभ्यास कराया जाता है। कम्प्यूटर का सम्पूर्ण प्रशिक्षण भी दिया जाता है। गुरुकुल में एक गोशाला भी है। विद्यार्थियों को गोसेवा, गोसंरक्षण की पद्धतियों से अवगत कराया जाता है। विभिन्न विषयों पर प्रतियोगिताएँ आयोजित कर विजेताओं को पुरस्कृत किया जाता है, जिससे उनकी योग्यता अभिवृद्ध होती है और प्रोत्साहन भी। इस गुरुकुल में जात्यादि भेदों से अतीत होकर सभी जिज्ञासुओं को केवल संस्कृत भाषा ही नहीं, अपितु सस्वर वेदपाठ एवं सम्पूर्ण वैदिक वाङ्मय पढ़ाया जाता है।

इस गुरुकुल में वेद, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद्, उपवेद, कोष, वेद-लक्षण, वेदाङ्ग, दर्शन, स्मृति, साहित्य, इतिहास, शोधग्रन्थ आदि अनेक विषयक संस्कृत, हिन्दी, तेलुगु एवं अंग्रेजी भाषाओं में सम्पूर्ण साहित्य से आधुनिक पद्धति में सुसज्जित विशाल पुस्तकालय है। इसमें लगभग पांच लाख रुपये से अधिक मूल्यवान् छः हजार से अधिक ग्रन्थ उपलब्ध हैं। एक भव्य एवं सुन्दर यज्ञशाला, ध्यानमन्दिर, छात्रावास, अतिथिगृह, कार्यालय, पाकशाला, भोजनशाला, स्नानागार आदि सभी सुविधायें उपलब्ध हैं। विद्यार्थियों को पुष्टिकारक विशुद्ध सात्विक भोजन दिया जाता है।

गुरुकुल के उद्देश्य

१. सम्पूर्ण वैदिक वाङ्मय का अध्ययन-अध्यापन एवं अनुसन्धान।
२. वैदिक विद्वानों का निर्माण।
३. वैदिक धर्म के प्रचारकों तथा पुरोहितों का निर्माण।
४. वैदिक संस्कृति और सभ्यता की रक्षा।
५. वैदिक वाङ्मय एवं वेदानुकूल ग्रन्थों का प्रकाशन।
६. वैदिक आश्रम-धर्म की रक्षा के हेतु वानप्रस्थ और संन्यास आश्रम की स्थापना।

७. दैवीभाषा संस्कृत का तथा राष्ट्रभाषा हिन्दी का प्रचार-प्रसार करना।
८. अनाथ एवं निर्धन बालकों को आश्रय देकर शिक्षित करना एवं यथासम्भव सहयोग करना।
९. ग्रामीण परिसरों में निश्शुल्क चिकित्सालयों की स्थापना करना।
१०. गोमाता की रक्षा के लिये गोशालाओं की स्थापना करना।
११. प्रमुख नगरों तथा ग्रामों में वैदिक पुस्तकालयों की स्थापना करना।

प्रवेश के इच्छुक विद्यार्थी एवं सहयोग के अभिलाषी गुरुकुल के आचार्य से सम्पर्क करें।

विशेष सूचना -

इस गुरुकुल को दिये जाने वाले दान पर आयकर अधिनियम 80G के अनुसार आयकर में छूट दी जाती है। दानराशि के चैक या ड्राप्ट **''निगम-नीडम्''** के नाम से भेजे जा सकते हैं। ऑन लाईन में भेजने वाले दाता दूरभाष पर सूचित कर गुरुकुल के खाते में राशि जमा करा सकते हैं - Nigama Needam, S.B.I (State Bank of India), A/C. No. 10060004635, Br.Mudfort (Secunderabad), Br. No.07111. IFS Code : SBIN0007111. धनादेश (M.0.) इस पते पर भेजा जा सकता है- उदयनाचार्य (अध्यक्ष), निगम-नीडम् (वेदगुरुकुल), महर्षि दयानन्द मार्ग, पिडिचेड, मेदक जिला (तेलंगाणा)- 502 278
दूरभाष सं. 09440721958, 07702010831

उदयनाचार्य के द्वारा प्रणीत ग्रन्थ
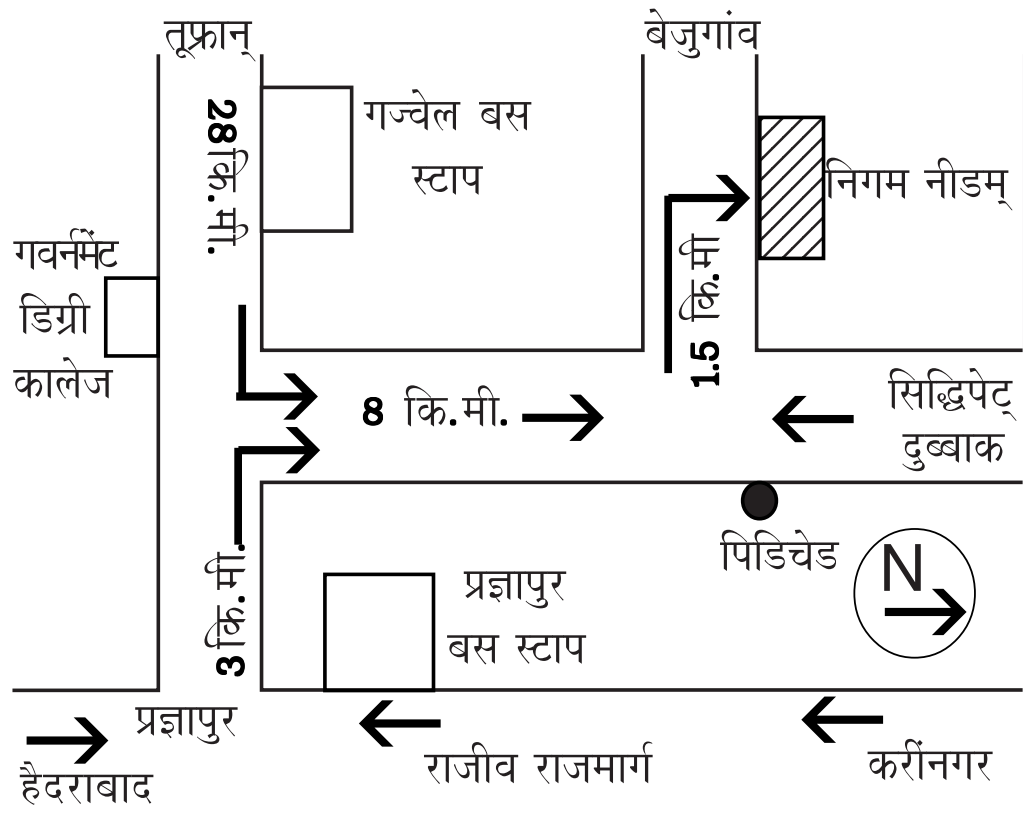
१. शिक्षा शास्त्रम् (संस्कृत,हिन्दी)...	१५०.००
२. पाणिनीय शिक्षा (संस्कृत,हिन्दी)...	३०.००
३. हितोपदेश (संस्कृत,हिन्दी)...	७०.००
४. गोदानविधिः (संस्कृत,हिन्दी)...	५०.००
५. गोदानविधिः (संस्कृत,तेलुगु)...	२०.००
६. वैदिक-पर्व-पद्धति-नववर्षेष्टि (हिन्दी)...	७५.००
७. वैदिक-पर्व-पद्धति-युगादि (तेलुगु)...	७५.००
८. अष्टाङ्गयोग (तेलुगु)......	
९. अष्टाध्यायी (तेलुगु).....	